सुविचार
जब तक तुम स्वयं पर विशवाश नहीं करते, परमात्मा में विश्वास कर ही नहीं सकते।
विवेकानंद

दैनिक
रेवांचल टाइम्स
निष्पक्ष, निर्भीक एवं सत्य का प्रवर्तक

Revanchal Times
7509202320
@revanchal_times
revanchaljabalpur@gmail.com
revanchaltimes_

■ वर्ष 2 ■ अंक 196 ■ जबलपुर, शुक्रवार 11 जुलाई 2025 ■ पृष्ठ 8 ■ मूल्य, 01 रुपये

वडोदरा ब्रिज हादसे में एक्शन, 4 इंजीनियर तत्काल प्रभाव से सस्पेंड, अन्य पुलों की जांच के भी आदेश

कमेटी ने 5 इंजीनियर्स की जिम्मेदारी तय की

नई दिल्ली। वडोदरा में हुए पुल हादसे के बाद गुजरात सरकार एक्शन मोड में आ गई है। सीएम भूपेंद्र पटेल ने हादसे की विस्तृत और गहन हाई लेवल जांच के आदेश दिए थे। विशेषज्ञों की एक टीम को इसकी जिम्मेदारी सौंपी गई थी, जिसे रिपेयर, इंस्पेक्शन और क्वालिटी चेक को लेकर रिपोर्ट पेश करनी थी। प्रारंभिक जांच के बाद एक्सपर्ट की कमेटी ने 5 इंजीनियर्स की जिम्मेदारी तय की। इसका संज्ञान लेते हुए पांचों इंजीनियर्स को तत्काल प्रभाव से सस्पेंड कर दिया गया है। इनके नाम एनएम नाइकवाला (कार्यपालक अभियंता), यूसी पटेल (उप-कार्यपालक अभियंता), आरटी पटेल (उप-कार्यपालक अभियंता) और जेवी शाह (सहायक अभियंता) हैं।

मौत का आंकड़ा बढ़कर हुआ 16

वहीं सीएम भूपेंद्र पटेल ने राज्य के अन्य पुलों का भी तत्काल और गहन निरीक्षण करने के निर्देश दिए हैं। महिसागर नदी पर बने गंभीरा पुल के ढहने से मरने वालों का आंकड़ा बढ़कर 16 हो गया है, जबकि कम से कम तीन लोग अभी भी लापता हैं। गुरुवार को चार और शव बरामद किए गए। आणंद और वडोदरा शहर को जोड़ने वाले इस चार दशक पुराने पुल का कुछ हिस्सा बुधवार सुबह भरभराकर नदी में गिर गया था। वहां से गुजर रहे कई वाहन नदी में जा गिरे थे। वडोदरा के कलेक्टर अनिल धामेलिया के अनुसार- 'एनडीआरएफ और एसडीआरएफ की टीमें नदी के भीतर चार किलोमीटर तक व्यापक स्तर पर खोजबीन कर रही हैं। अब तक 16 शव बरामद किए जा चुके हैं जबकि तीन लोग अभी भी लापता हैं। अन्य किसी भी लापता व्यक्ति की सूचना देने के लिए लोग हमारे नियंत्रण कक्ष में काल कर सकते हैं।'

बुधवार देर रात्रि तीन शव मिले

उन्होंने कहा कि हो सकता है कि कुछ और लोग इस हादसे का शिकार हुए हों, क्योंकि नदी में गिरने वाली एक कार और एक मिनी ट्रक के बारे में कोई विशेष जानकारी उपलब्ध नहीं है। ये वाहन कीचड़ में तीन मीटर तक धंसे हुए हैं। प्रशासन के अनुसार, मृतकों में आणंद जिले के आठ, वडोदरा के चार, भरुच के दो, देवभूमि द्वारका व पंचमहल के एक-एक व्यक्ति हैं। नदी में गिरे टाइल्स से भरे ट्रक को हटाकर तलाश करने पर बुधवार देर रात्रि तीन शव मिले। कलेक्टर ने कहा- 'बारिश और नदी में कीचड़ की मोटी परत की वजह से बचाव कार्य बेहद चुनौतीपूर्ण बना हुआ है क्योंकि ऐसी स्थिति में कोई मशीन काम नहीं कर रही है। नदी के बीच में डूबे हुए वाहनों के करीब पहुंचने के लिए किनारे पर एक विशेष पुल का निर्माण किया जा रहा है।' इस बीच उच्च स्तरीय जांच करने के लिए सड़क और भवन विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों की एक टीम ने गुरुवार को घटनास्थल का दौरा किया।

बिहार में वोटर लिस्ट रिवीजन जारी रहेगा

चुनाव आयोग को सुप्रीम कोर्ट का निर्देश- आधार, वोटर आईडी, राशन कार्ड को भी पहचान पत्र मानें

पटना। सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को बिहार विधानसभा चुनाव से पहले वोटर लिस्ट के रिवीजन जारी रखने की अनुमति दी। अदालत ने इसे संवैधानिक जिम्मेदारी बताया। सुप्रीम कोर्ट में जस्टिस सुधांशु धूलिया और जस्टिस जॉयमाल्या बागची की बेंच ने विशेष गहन पुनरीक्षण (रक्क्र) यानी वोटर लिस्ट रिवीजन की टाइमिंग पर सवाल उठाए।

अदालत ने चुनाव आयोग से कहा कि बिहार में रक्क्र के दौरान आधार, वोटर आईडी, राशन कार्ड को भी पहचान पत्र माना जाए। बेंच के मुताबिक, 10 विपक्षी दलों के नेताओं समेत किसी भी याचिकाकर्ता ने चुनाव आयोग की इस प्रक्रिया पर अंतरिम रोक की मांग नहीं की है। सुप्रीम कोर्ट ने याचिकाओं पर चुनाव आयोग से 21 जुलाई तक जवाब मांगा। अगली सुनवाई 28 जुलाई के लिए तय की। विशेष गहन पुनरीक्षण (रक्क्र) यानी वोटर लिस्ट रिवीजन पर अदालत में करीब 3 घंटे सुनवाई हुई। याचिकाकताओं का आरोप है कि वोटर लिस्ट रिवीजन नियमों को दरकिनार कर किया जा रहा है। वोटर की

> अगर आप बिहार में मतदाता सूची के रिवीजन के तहत नागरिकता की जांच करना चाहते हैं, तो पहले ही कार्रवाई करनी चाहिए थी। अब थोड़ी देर हो गई है।
> **सुप्रीम कोर्ट**

नागरिकता जांची जा रही है। ये कानून के खिलाफ है। रक्क्र के खिलाफ राजद सांसद मनोज झा, ळटउ सांसद महुआ मोइत्रा समेत 11 लोगों ने याचिकाएं दाखिल की हैं। याचिकाकर्ता की ओर से वकील गोपाल शंकर नारायण, कपिल सिब्बल और अभिषेक मनु सिंघवी ने जिरह की। चुनाव आयोग की पैरवी पूर्व अटॉर्नी जनरल केके वेणुगोपाल, राकेश द्विवेदी और मनिंदर सिंह ने की।

याचिकाकर्ता के वकील: अब जबकि चुनाव कुछ ही महीनों दूर हैं, चुनाव आयोग कह रहा है कि वह पूरी मतदाता सूची का विशेष गहन पुनरीक्षण (SIR) 30 दिनों में करेगा।

सुप्रीम कोर्ट: SIR प्रक्रिया में कोई बुराई नहीं है, लेकिन यह आगामी चुनाव से कई महीने पहले ही कर ली जानी चाहिए थी। भारत में मतदाता बनने के लिए नागरिकता की जांच करना आवश्यक है, जो संविधान के अनुच्छेद 326 के तहत आता है। चुनाव आयोग जो कर रहा है, वह संविधान के तहत अनिवार्य है और इस तरह की पिछली प्रक्रिया 2003 में की गई थी।

सुप्रीम कोर्ट: SIR के दौरान दस्तावेजों की सूची से आधार कार्ड को बाहर रखा जा रहा है।

चुनाव आयोग: वोटर रिवीजन के दौरान सिर्फ आधार ही नहीं मांगा जा रहा, अन्य दस्तावेज भी मांग रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट ने आयोग से कहा, हम आपकी नीयत पर संदेह नहीं कर रहे सुप्रीम कोर्ट ने आयोग की ओर से पेश वकील राकेश द्विवेदी से कहा, ह्लहम आपकी नीयत पर संदेह नहीं कर रहे, लेकिन धारणा भी मायने रखती है।

पीरियड्स की जांच के लिए कपड़े उतरवाए

महाराष्ट्र के स्कूल में 5वीं से 10वीं तक की बच्चियों के साथ हरकत, प्रिंसिपल हिरासत में

मुम्बई। महाराष्ट्र के ठाणे के एक प्राइवेट स्कूल में कक्षा 5 से 10 तक की बच्चियों के कपड़े उतरवाकर चेकिंग की गई। बच्चियों ने अपने पेरेंट्स को बताया कि स्कूल के टॉयलेट में खून के धब्बे मिले थे। जिसके बाद सभी लड़कियों को कन्वेंशन हॉल में बुलाया गया और प्रोजेक्टर पर इसकी तस्वीरें दिखाई गईं। इसके बाद लड़कियों से पूछा गया कि किस-किस को अभी पीरियड्स हो रहे हैं। जिन लड़कियों ने हां में जवाब दिया, उनकी उंगलियों के निशान लिए गए। जिन लड़कियों ने न में जवाब दिया, उन्हें बारी-बारी से टॉयलेट में ले जाकर एक एक के कपड़े उतरवाकर प्राइवेट पार्ट्स की जांच की गई। पेरेंट्स की शिकायत के बाद पुलिस ने प्रिंसिपल को हिरासत में ले लिया है। **पेरेंट्स ने स्कूल में हंगामा किया**– जब बच्चियों ने ये बात घर जाकर पेरेंट्स को बताई तो पेरेंट्स स्कूल के बाहर जमा हो गए और हंगामा किया। वे प्रिंसिपल की गिरफ्तारी की मांग कर रहे थे। पुलिस ने स्कूल पहुंचकर प्रिंसिपल को हिरासत में ले लिया है और शहापुर पुलिस स्टेशन ले गई है। पेरेंट्स ने स्कूल के बाहर जमा होकर प्रिंसिपल पर पुलिस एक्शन की मांग की। पेरेंट्स ने स्कूल के बाहर जमा होकर प्रिंसिपल पर पुलिस एक्शन की मांग की।

गुरु पूर्णिमा पर्व पर गुरु की हत्या दो छात्रों ने प्रधानाचार्य को घोंपा चाकू

हिसार। गुरु पूर्णिमा पर्व पर गुरुवार को हरियाणा के हिसार के बास बादशाहपुर गांव में स्थित करतार मेमोरियल सीनियर सेकेंडरी स्कूल में गुरुवार को एक सनसनीखेज वारदात के तहत स्कूल के प्रधानाचार्य जगबीर सिंह की दो छात्रों ने चाकू मारकर हत्या कर दी। इस घटना ने स्कूल परिसर में दहशत का माहौल पैदा कर दिया।

वारदात के बाद दोनों छात्र वहां से फरार हो गये। जिस वक्त यह वारदात हुई उस समय स्कूल में पेपर चल रहा था। घायल प्रधानाचार्य को तुरंत निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। घटना की सूचना मिलने पर पुलिस ने मौके पर पहुंचकर साक्ष्य जुटाये। पुलिस को वारदात में शामिल चाकू मौके पर ही पड़ा मिला है। स्कूल स्टाफ ने बताया यह बिल्डिंग नारनौंद के पूर्व विधायक सरोज मोर के परिवार की है। इस बिल्डिंग को जगबीर ने दो साल पहले लीज पर लिया था। अचानक हुए हमले से जगबीर ने बचने की कोशिश भी की, लेकिन छात्रों ने उन पर चाकुओं से वार करना जारी रखा। कुछ ही सेकेंड में शरीर कई वार किए। इससे जगबीर लहूलुहान होकर जमीन पर गिर पड़े। इसके बाद दोनों आरोपी छात्र चाकू लहराते हुए वहां से भाग गए। वहां मौजूद टीचर और अन्य स्टाफ ने तुरंत घायल जगबीर को एक निजी अस्पताल में पहुंचाया, जहां इलाज के कुछ देर बाद ही उनकी मौत हो गई। उधर, घटना के बाद स्कूल की भी छुट्टी कर दी गई। पेपर दे रहे बच्चों को घर भेज दिया गया। सूचना मिलते ही थाना बास पुलिस अस्पताल पहुंची और मृतक जगबीर के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया। एक टीम स्कूल भी भेजी गयी, जिसने घटना के बारे में स्कूल स्टाफ और छात्रों से जानकारी ली। ह्यसीन ऑफ क्राइमह्ण टीम ने भी मौके पर पहुंच कर साक्ष्य जुटाए। थाना बास प्रभारी मनदीप सिंह ने बताया कि स्कूल में लगे सीसीटीवी कैमरे की फुटेज सामने आयी है। इसमें दोनों आरोपी छात्र वारदात के बाद भागते हुये नजर आ रहे हैं। आरोपी छात्रों की पहचान कर ली है। उन्हें पकड? के लिए टीमें लगायी गयी हैं। हमले का कारण अभी स्पष्ट नहीं हो पाया है। पुलिस ने जल्द ही आरोपियों को पकडने का दावा किया है।

मध्य प्रदेश में नगरीय निकाय उपचुनाव में 3 पर कांग्रेस तो 6 पर भाजपा के प्रत्याशी जीते

भोपाल। मध्य प्रदेश के 9 नगरीय निकायों में हुए उपचुनाव में 3 पर कांग्रेस और 6 पर भाजपा प्रत्याशी ने जीत दर्ज की है। पन्ना जिले के ककहरी में भाजपा प्रत्याशी हीरा लाल आदिवासी निर्विरोध जीते, उनके सामने कोई दूसरा प्रत्याशी खड़ा नही हुआ था। मंडला के बिछिया में वार्ड क्रमांक 13 में कांग्रेस प्रत्याशी जानकी बाई धुर्वे ने पार्षद पर पर जीत हासिल की। शहडोल जिले के खांड में वार्ड क्रमांक 8 में हुए उपचुनाव में कांग्रेस के शशिधर त्रिपाठी ने जीत हासिल की। इंदौर के सांवेर में वार्ड क्रमांक 7 में कांग्रेस की प्रत्याशी हसीना की जीत हुई। इधर खरगोन के भीकनगांव के वार्ड नंबर 5 में भाजपा की कमलेश कौशल, सिवनी के वार्ड नंबर 11 में भाजपा की निधि, छिंदवाड़ा के न्यूटन चिखली के वार्ड 4 में भाजपा क निकिता बरखे, भोपाल में बैरसिया के वार्ड 7 में भाजपा की शाइस्ता सुल्तान और इंदौर के गौतमपुरा के वार्ड 15 में भाजपा के शंकलाल ने जीत दर्ज की। खरगोन जिले के भीकनगांव नगर परिषद के वार्ड 5 के उपचुनाव में भाजपा की कमलेश कौशल 205 वोट से चुनाव जीती।

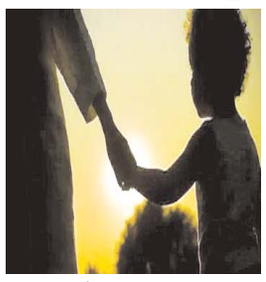

डैनी के इश्क में डायन बनी मां, नदी में डुबो दिए 3 मासूम बच्चे, अदालत ने सुनाई फांसी की सजा

औरैया। इश्क में अंधी मां ने अपने तीन मासूम बच्चों की नदी में डुबोकर हत्या कर दी, जिसके बाद अदालत ने उसे फांसी की सजा सुना दी है। मामला उत्तर प्रदेश के औरेया जिला का है। अदालत ने प्रेम प्रसंग के चक्कर में अपने तीन मासूम बच्चों की नदी में डुबो कर हत्या कर वाली मां को गुरुवार को फांसी की सजा सुनाई, जबकि उसके प्रेमी को उम्रकैद की सजा से दंडित किया गया है।

अपर जिला एवं संत्र न्यायाधीश तृतीय डकैती कोर्ट सैफ अहमद ने पिछले साल 27 जून को हुई इस जघन्य वारदात में प्रियंका को दोषी करार देते हुए फांसी की सजा सुनाई, जबकि उसके प्रेमी और चचेरे देवर आशीष उर्फ डैनी को आजीवन कारावास की सजा सुनाई। इस जघन्य वारदात में अभियोजन ने कुल छह गवाह पेश किये जिसमें प्रियंका के हाथों बचे उसके नौ वर्षीय पुत्र सोनू को चश्मदीद गवाह बनाया गया और उसकी गवाही दोषियों को उनके अंजाम तक पहुंचाने में कारगर रही। गौरतलब है कि जिले के फफूंद थाना क्षेत्र के गांव अटा बरूआ निवासी प्रियंका (27) की शादी इटावा के बसरेहर निवासी अवनीश से हुई थी। जिससे चार बच्चे है। दो साल पहले पति अवनीश की करंट लगने से मौत हो गई। इसके बाद प्रियंका चचेरे देवर औरैया निवासी आशीष के साथ पत्नी के रूप में साथ रहने लगी थी। आशीष के कहने पर प्रियंका ने केश्मपुर में सेंगर नदी के घाट पर चारों बच्चों को नशीला पदार्थ खिला कर नदी में डुबो दिया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने एकमात्र जीवति बचे सोनू को बाहर निकाला जिसने नाम पता और घटनाक्रम बताया। इस पर परिजनों को सूचना दी गई। गोताखोर ने नदी से छह साल के आदित्य और चार साल के माधव के शव को बाहर निकाल लिया, जबकि डेढ़ के मंगल का शव करीब दो घंटे बाद मिला। पुलिस ने मृतक बच्चों के चाचा मनीष की तहरीर पर प्रियंका और आशीष के खिलाफ धारा 302, 307 और 120बी के तहत मामला दर्ज किया और जांच के बाद आरोप पत्र अदालत में प्रस्तुत किया। अदालत ने इस संवेदनशील मामले में त्वरित कार्रवाई की और एक साल 13 दिन बाद अपना फैसला सुना दिया।

मुख्यमंत्री मोहन यादव ने कहा कि इन दिनों सरकारी स्कूल सुविधा और गुणवत्ता दोनों में आगे हैं

लैपटॉप, साइकिल के बाद अगले महीने दी जाएगी स्कूटी

भोपाल। प्रदेश के मेधावी विद्यार्थियों को लैपटाप व साइकिल के बाद अगले महीने स्कूटी भी दी जाएगी। 7,800 विद्यार्थी स्कूटी के लिए पात्र हैं। अगले सत्र से बच्चों को गणेवश तैयार करवाकर वितरित किया जाएगा। साथ ही 75 प्रतिशत अधिक अंक लाने वाले करीब एक लाख मेधावी विद्यार्थियों को राशि के बदले अब लैपटाप दिए जाएंगे। यह घोषणा मुख्यमंत्री मोहन यादव ने गुरु पूर्णिमा के अवसर पर भोपाल में कमला नेहरू सांदीपनि विद्यालय के भवन के लोकार्पण समारोह में की। साथ ही कहा कि सांदीपनि विद्यालय में बच्चों के लिए सभी सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी। इस दौरान छात्राओं से भी मिले। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में 369 सांदीपनि विद्यालय संचालित हो रहे हैं। जहां शिक्षा केवल किताबों तक सीमित नहीं है, बल्कि ये स्कूल विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के केंद्र बनकर उभरे हैं। अब सरकारी स्कूल सुविधा और गुणवत्ता दोनों में आगे हैं। इस बार मप्र बोर्ड 10वीं व 12वीं के परिणाम में सरकारी स्कूलों ने 15 सालों का रिकार्ड तोड़ दिया है। निजी स्कूल पीछे रह गए हैं। अब सौ प्रतिशत परिणाम लाने वाले विद्यालयों को प्रोत्साहन राशि दी जाएगी। महू, देवास, नरसिंहपुर के विद्यालयों को बेहतर शैक्षणिक प्रबंधन विकास के लिए पांच-पांच

लाख रुपये प्रोत्साहन के रूप में दिए जाएंगे।

अभियान के पहले दिन बंटी 4.30 लाख साइकिलें– मुख्यमंत्री ने समग्र शिक्षा अभियान के अंतर्गत स्कूली बच्चों को निश्शुल्क साइकिल वितरण के दो दिवसीय अभियान का शुभारंभ करते हुए 50 विद्यार्थियों को साइकिलें वितरित कीं। अभियान के पहले दिन विभिन्न जिलों में विद्यार्थियों को 4.30 लाख साइकिलें बांटी गईं। विद्यार्थियों ने एक धुन में साइकिल की घंटी बजाकर मुख्यमंत्री का अभिवादन किया।

प्रदेश के 1.27 करोड़ लाड़ली बहनों को मिलेगा रक्षाबंधन का तोहफा– मुख्यमंत्री डा. यादव ने कहा कि सनातन संस्कृति में नारी को देवी के रूप में पूजा जाता है। भारतीय समाज में उनका अलग ही स्थान है। प्रदेश की 1.27 करोड़ लाड़ली बहनों को रक्षाबंधन के अवसर पर 1,500 रुपये की राशि ट्रांसफर की जाएगी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में 2029 तक देश की बहनों को लोकसभा और विधानसभा में 33 प्रतिशत आरक्षण मिलेगा।

उज्जैन में प्रारंभ होगा सेटैलाइट सेंटर– मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश के 55 पीएम एक्सीलेंस कॉलेजों में नई शिक्षा नीति लागू की गई है, जहां विद्यार्थियों को रोजगारपरक शिक्षा दी जा रही है। इसी उद्देश्य से उज्जैन में आईआईटी का सेटैलाइट सेंटर प्रारंभ किया जाएगा। सरकार में चिकित्सा शिक्षा और स्वास्थ्य विभाग का विलय कर मेडिकल एजुकेशन एवं हेल्थ सेक्टर में नवाचार किया है। छोटे शहरों में मेडिकल कॉलेज खोलने पर जोर दिया जा रहा है, जिससे आगामी दो वर्ष के अंदर एमबीबीएस की सीटें 10 हजार हो जाएंगी। मध्य प्रदेश इकलौता ऐसा राज्य है, जहां नीट पास करने के बाद सरकार मेडिकल एजुकेशन के लिए विद्यार्थियों को भरपूर सहयोग कर रही है।

मां रेवा पब्लिकेशन एंड प्रिंटर्स
जबलपुर शहर में सबसे कम दामों में
समाचार पत्र के A to Z कार्य का एकमात्र स्थान
प्रिंटिंग
जॉब वर्क
न्यूज पेपर
पीडीएफ
संपर्क करें 7415685293 7509202320 9340553112
68/1 लक्ष्मीपुर विवेकानंद वार्ड, मुस्कान प्लाजा के पीछे, एम आर 4 रोड, उखरी, जबलपुर (मप्र)

आदिवासी छात्रों के भविष्य से हो रहा है खिलवाड़, जमकर मची शिक्षा के नाम पर लूट

दैनिक रेवांचल टाइम्स मंडला की विशेष रिपोर्ट

मंडला में नर्सिंग कॉलेजों का खेला...

दैनिक रेवांचल टाइम्स मंडला। आदिवासी बैगा बाहुल्य मंडला जिले में स्थित कई नर्सिंग कॉलेजों में छात्रों के भविष्य के साथ गंभीर खिलवाड़ हो रहा है। छात्रों को न तो समय पर रजिस्ट्रेशन मिल रहा है, और न ही स्कॉलरशिप की राशि। ऊपर से कॉलेज प्रबंधन खुलेआम मुंह मांगी रकम वसूल रहे हैं।

रजिस्ट्रेशन के नाम पर मुंह मांगी मोटी रकम

कॉलेज प्रबंधन की छात्रों से दो टूक पैसे दो तो ही रजिस्ट्रेशन मिलेगा अन्यथा जिसको शिकायत करना है कर दो हम किसी से नहीं डरते कलेक्टर के पास जाओ या चाहे पुलिस के पास.. स्कॉलरशिप के लिए बच्चों की दौड़-धूप, जबलपुर यूनिवर्सिटी से संबद्धता पर भी सवाल छात्रों ने दैनिक रेवांचल टाइम्स को बताया कि उनके परीक्षा संपन्न हुए 5 से 6 महीने बीत चुके हैं, लेकिन अभी तक उन्हें स्कॉलरशिप की राशि नहीं मिली है। जब वे कॉलेज से इस बारे में जानकारी मांगते हैं, तो प्रबंधन टाल-मटोल करता है या फिर खुलेआम रजिस्ट्रेशन/डिप्लोमा देने के नाम पर मोटी रकम की मांग करता है।

आदिवासी शोषित बच्चों ने सुनाई आपबीती

छात्र-छात्राओं का कहना है कि उन्हें अब तक न रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट मिला है, और न ही डिग्री या डिप्लोमा। इससे उनकी नौकरी लगने की संभावना भी खत्म होती जा रही है। कुछ छात्र मानसिक रूप से परेशान हैं, और कई परिवार आर्थिक रूप से टूट

चुके हैं।

जबलपुर यूनिवर्सिटी से जुड़ा है कॉलेज, फिर मंडला में क्यों?

वही सूत्रों से बतलाते हैं कि कॉलेजों की संबद्धता जबलपुर की यूनिवर्सिटी से बताई जा रही है। बड़ा सवाल यह है कि जब यूनिवर्सिटी जबलपुर में है, तो मंडला जैसे जिले में नियमों को ताक पर रखकर कॉलेज कैसे चल रहे हैं? क्या विश्वविद्यालय की अनुमति है?

छात्रों से वसूली का पैटर्न

सम्बन्धित नर्सिंग कॉलेजों ने छात्रों से वसूली के अलग अलग तरीके अपना रखें हैं तो वहीं आदिवासी बैगा बाहुल्य जिला मंडला में आदिवासी

छात्र छात्राओं से मोटी रकम की अवैध वसूली की जा रहीं हैं...

जैसे स्कॉलरशिप नहीं मिलने तक फॉर्म अटकाना रजिस्ट्रेशन के लिए 40-50 हजार रुपये मांगना

डिग्री देने के बदले अलग से कैश की डिमांड, सरकारी योजनाओं के लाभ को रोकने जैसी धमकियां, और भी अन्य तरीके कॉलेज प्रबंधन ने ईजाद कर रखें हैं जिसके दबाव में आकर के आदिवासी छात्र छात्राये मजबूर होकर के प्रबंधन के सामने नतमस्तक हो जाते हैं।

दैनिक रेवांचल टाइम्स जल्द करेगा खुलासा

रेवांचल टाइम्स के पास अब इन कॉलेजों की पूरी सूची और

छात्रों के नाम मौजूद हैं। आने वाले दिनों में दैनिक रेवांचल टाइम्स जल्द ही ऐसे कॉलेज का नाम और संबंधित अधिकारियों की भूमिका का खुलासा करेगा जो आदिवासी बैगा बाहुल्य जिले में खुली लूट मचा रखी हैं,यह मामला सिर्फ आदिवासी पिछड़े छात्र छात्राओं का नहीं, अपितु पूरे शिक्षा तंत्र की साख पर सवाल है। मंडला जिला प्रशासन और जबलपुर विश्वविद्यालय को इस मामले में तुरंत ही हस्तक्षेप कर कार्रवाई करनी चाहिए।

विशेष अपीलः- दैनिक रेवांचल टाइम्स आप सभी अभिभावकों से एक विशेष अपील करता हैं कि अगर आप के बच्चे भी ऐसे किसी कॉलेज में पढ़ रहे हैं और कॉलेज प्रबंधन के द्वारा आर्थिक, मानसिक शोषण का शिकार हो रहे हैं, तो अपनी जानकारी रेवांचल टाइम्स तक जरूर पहुंचाएं।

मंत्री श्रीमती उइके गुरु पूर्णिमा के कार्यक्रम में हुई शामिल

दादा धनीराम आश्रम महाराजपुर में कक्ष निर्माण के लिए विधायक निधि से 7 लाख रुपये की राशि स्वीकृत

दैनिक रेवांचल टाइम्स मंडला। कैबिनेट मंत्री लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग श्रीमती संपतिया उइके के दादा धनीराम आश्रम महाराजपुर में गुरु पूर्णिमा के अवसर पर पहुँची और सभी को गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर की हार्दिक शुभकामनाएँ दी। इस अवसर पर उन्होंने आश्रम में उपस्थित पूज्य संत-महात्माओं एवं गुरुजनों का पूजन अर्चन कर आशीर्वाद लिया। इस दौरान आश्रम में अतिरिक्त कक्ष निर्माण की बात स्थानीय लोगों और श्रद्धालुओं द्वारा की गई। मंत्री श्रीमती उइके ने विधायक निधि से 7 लाख रुपये की राशि का स्वीकृति पत्र आश्रम के सदस्यों को सौंपा। इस मौके पर श्री रानू राजपूत, श्री जोरावर सिंह, श्री रीतेश राय सहित अन्य गणमान्य नागरिक और श्रद्धालु मौजूद थे।

रामनगर पुल पर जमा कीचड़ फिसलकर गिर रहे बाइक सवार

दैनिक रेवांचल टाइम्स मंडला। मंडला जिले में स्थित रामनगर का नर्मदा पुल इन दिनों लोगों के लिए परेशानी का कारण बन गया है। हाल में हुई बारिश के बाद पुल पर मिट्टी जम गई है। यह मिट्टी अब कीचड़ में बदल चुकी है। पुल पर जमा कीचड़ के कारण आए दिन हादसे हो रहे हैं। कई बाइक सवार फिसल कर चोटिल हो चुके हैं। मंडला से रामनगर की ओर आने-जाने वाले राहगीरों को भी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। स्थानीय लोगों ने प्रशासन से पुल की सफाई कराने की मांग की है। उनका कहना है कि अगर समय रहते सफाई नहीं की गई तो बड़ा हादसा हो सकता है। रामनगर एक प्रमुख पर्यटन स्थल है। यहां बड़ी संख्या में पर्यटक आते हैं। पुल की यह स्थिति जिले की छवि को भी नुकसान पहुंचा सकती है। प्रशासन से अपेक्षा की जा रही है कि वह स्थिति को देखते हुए जल्द कार्रवाई करे। इससे आम लोगों की आवाजाही सुरक्षित हो सकेगी।

एसपी मंडला द्वारा थाना घुघरी का आकस्मिक निरीक्षण

रेवांचल टाईम्स, मंडला। जिले के थाना घुघरी मिस्टर दिनांक 09 जुलाई 2025 को पुलिस अधीक्षक मंडला द्वारा थाना घुघरी का आकस्मिक निरीक्षण किया गया। इस दौरान एसपी महोदय ने थाना के विभिन्न कार्यो की समीक्षा कर थाना प्रभारी व उपस्थित पुलिस अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान विशेष रूप से ढएरअ एक्ट के क्रियान्वयन, माइक्रो बीट व्यवस्था, ई-समन प्रणाली एवं थाना परिसर में खड़े जब्त/लावारिस वाहनों के निराकरण की स्थिति की विस्तारपूर्वक समीक्षा की गई। माइक्रो बीट प्रणाली को और अधिक प्रभावी बनाने पर बल देते हुए एसपी ने कहा कि बीट प्रभारी अपने क्षेत्रों में नियमित संपर्क बनाए रखें एवं गतिविधियों पर सतत निगरानी रखें व आवश्यक जानकारी का बीट पुस्तिका मे लेख करें। ई-समन प्रणाली के माध्यम से न्यायालयीन कार्यवाहियों (आनलाईन प्राप्त संमंस एवं वारंटो) का समय पर व शतप्रतिशत पूर्ण किया जाना सुनिश्चित किया जाए। थाना परिसर में लावारिस अथवा जब्त वाहनों की स्थिति की समीक्षा करते हुए शीघ्र निराकरण की कार्रवाई करने के निर्देश दिए गए। पुलिस अधीक्षक द्वारा थाना परिसर की साफ-सफाई, दस्तावेजों के रख-रखाव और आमजन के साथ व्यवहार में संवेदनशीलता बनाए रखने की भी बात कही गई। निरीक्षण के अंत में उन्होंने समस्त स्टाफ के एक-एक से बात कर माईक्रोबिट प्रणाली में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका संबंधित निर्देश दिए गये।

210 गांवों में भरा पानी, 305 मकान क्षतिग्रस्त, 2 लापता

मंडला में 23 दिन के दौरान 61% बारिश:7 लोगों की मौत

दैनिक रेवांचल टाइम्स मंडला। मंडला जिले में 18 जून से अब तक 810 मिमी यानी 31.87 इंच बारिश हो चुकी है। यह वार्षिक औसत 1326.2 मिमी (52.21 इंच) का 61 प्रतिशत है। बाढ़ की चपेट में आए 210 गांवों में जनजीवन अस्त-व्यस्त है। नदी-नालों को पार करते समय बहे 9 में से 7 लोगों की मौत हो चुकी है। 2 लोग अभी भी लापता हैं, जिनकी तलाश में एसडीईआरएफ की टीमें लगी हैं। बिछिया, बीजाडांडी, नारायणगंज, निवास और मंडला क्षेत्र सबसे अधिक प्रभावित हुए हैं। बिछिया के अंजनिया, माधोपुर, मरारटोला, करियागांव, जगन्नाथ, भलवारा और बीजाडांडी के बरौची, पीपलधर, तुमती, विजयपुर गांवों में बड़ा नुकसान हुआ है।

276 मकानों को नुकसान, 29 पूरी तरह से ढहे

कुल 276 मकानों को आंशिक नुकसान पहुंचा है। इनमें निवास में 23, नारायणगंज में 63, मंडला में 92, घघरी में 10, बिछिया में 51 और नैनपुर में 37 मकान शामिल हैं। इसके अलावा 29 मकान पूरी तरह से ढह गए हैं। इनमें नारायणगंज के 16, मंडला के 2, बिछिया के 6 और नैनपुर के 6 मकान हैं। नारायण गंज के डूब क्षेत्रों में पानी मकानों, गोशालाओं और घरेलू सामान में घुस गया है। इससे लोगों को भारी आर्थिक नुकसान हुआ। प्रभावित परिवारों के सामने रहने की स्थायी व्यवस्था का संकट खड़ा हो गया है। प्रशासन राहत कार्यों में जुटा है।

242 लोगों को सुरक्षित ठिकानों में रखकर भोजन आदि दे रहे- प्रशासन ने जिले के करीब 7 बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों से लोगों को सुरक्षित ठिकानों में शिफ्ट किया है। नारायण गंज के कॉन्ड्रा चौकी नाले में बाढ़ की वजह से 65 लोगों को बालक छात्रावास में, भावल के सौंधर के महोदर नाला में बाढ़ आने से 22 लोगों को प्राथमिक शाला भवन में, चन्देहरा के शंकरगंज में बलई नदी में बाढ़ की वजह से 35 लोग प्रभावित हैं। नैनपुर की थांवर नदी में बाढ़ की वजह से एफसीआई गोदाम में 40 और कन्या शाला में 80 लोगों रखा गया है। इस तरह इन 242 लोगों को प्रशासन द्वारा बाढ़ में डूबे क्षेत्र से सुरक्षित ठिकानों में रखकर भोजन आदि की व्यवस्था की जा रही है।

खड़देवरा : यहां 9 परिवारों के 19 लोग नाले में आई बाढ़ से प्रभावित हैं। इनमें से 2 परिवार पंचायत भवन में रह रहे हैं, जबकि अन्य रिश्तेदारों के घरों में शरण लिए हैं। पंचायत ने गैस चूल्हा और अनाज की व्यवस्था की गई है। ग्रामीण संतोष ठाकुर ने नाले में अतिक्रमण को बाढ़ का कारण बताया और प्रशासन से इसकी सफाई की मांग की। तुलाराम भेना ने कहा कि उनका मिट्टी का घर बाढ़ में पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। अब रहने की जगह नहीं बची। सीताराम का कहना था कि उनका मकान ढह गया। सामान दब गया। मवेशी खुले में हैं। उन्होंने नए निमार्णों को नाले की निकासी बाधित करने का जिम्मेदार ठहराया।

जन स्वास्थ्य अभियान भारत ने स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण पर राज्यसभा समिति को प्रमुख सिफारिशें प्रस्तुत की

रेवाँचल टाईम्स, मंडला। स्वास्थ्य और स्वास्थ्य सेवा के अधिकार के लिए प्रतिबद्ध एक राष्ट्रीय नेटवर्क, जन स्वास्थ्य अभियान इंडिया (खरअक) ने प्रो. राम गोपाल यादव की अध्यक्षता वाली माननीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण समिति, राज्यसभा को एक विस्तृत ज्ञापन प्रस्तुत किया है। इस ज्ञापन भारत में स्वास्थ्य सेवा की सामर्थ्य और पहुँच के बारे में तत्काल जरूरतों पर ध्यान आकर्षित किया गया है और प्रणालीगत सुधार के लिए नीतिगत सिफारिशों पर आधारित महत्वपूर्ण सुझाव दिये गए है। जन स्वास्थ्य अभियान, इंडिया ने निम्न प्रमुख मुद्दों पर राज्य सभा समिति का ध्यान आकर्षित किया है.. जेब से किया गया खर्चः सरकारी योजनाओं के बावजूद, कुल स्वास्थ्य व्यय का 47.1% अभी भी सीधे लोगों की जेब से खर्च होता है।

अपर्याप्त सार्वजनिक स्वास्थ्य अधोसारंचनाः भारत का सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यय, ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं में गंभीर कमी के साथ सकल घरेलू उत्पाद के 1.35% के निम्न स्तर पर बना हुआ है।

स्वास्थ्य में मानव संसाधन संकटः सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों में विशेषज्ञ डॉक्टरों की 80% से अधिक कमी है, और कई मेडिकल कॉलेजों में पर्याप्त संकाय की कमी है।

स्वास्थ्य असमानताओं का विस्तार: आदिवासी, दलित, महिलाएँ और विकलांग लोगों सहित हाशिए पर पड़े समुदायों को देखभाल तक पहुँच में संरचनात्मक भेदभाव का सामना करना पड़ रहा है।

निजीकरण और पीपीपी पर चिंताएँ: पीपीपी मॉडल के तहत सार्वजनिक अस्पतालों को निजी हितधारकों को सौंपने से सार्वजनिक जवाबदेही और पहुँच कम हो रही है।

व्यावसायिक और पर्यावरणीय स्वास्थ्य उपेक्षाः लाखों लोगों को सिलिकोसिस और प्रदूषण से जुड़ी बीमारियों का खतरा है, इसलिए तत्काल सुरक्षा उपायों और नियामक प्रतिक्रियाओं का अभाव है।

प्रमुख सिफारिशें:

1) सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली को मजबूत करें: सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यय को सकल घरेलू उत्पाद के 5% तक बढ़ाएँ; स्थायी कर्मचारियों की भर्ती सुनिश्चित करें; बुनियादी ढाँचे, दवा की उपलब्धता और निदान में सुधार करें।

2) सार्वभौमिक, समतापूर्ण स्वास्थ्य सेवाः स्वास्थ्य और स्वास्थ्य सेवा का अधिकार अधिनियम लागू करें; ढटखअ जैसे बीमा-संचालित मॉडल के बजाय सार्वजनिक रूप से वित्तपोषित प्रणाली में बदलाव करें।

3) निजी क्षेत्र का प्रभावी विनियमनः सभी राज्यों में नैदानिक प्रतिष्ठान अधिनियम लागू करें; मूल्य विनियमन, शिकायत निवारण और नैतिक मानकों को सुनिश्चित करें।

4) सामुदायिक भागीदारीः समुदाय आधारित निगरानी को संस्थागत बनाएं और ग्राम स्वास्थ्य समितियों को सशक्त बनाएं।

5) सामाजिक निर्धारकों को संबोधित करें: स्वास्थ्य सेवा को पोषण, स्वच्छता, स्वच्छ पेयजल और आवास योजनाओं के साथ एकीकृत करें, खासकर आदिवासी और वंचित क्षेत्रों में।

कलेक्टर ने किया बाढ़ प्रभावित रतनपुर चौकी स्कूल का निरीक्षण

मंडला। कलेक्टर सोमेश मिश्रा ने नारायणगंज विकासखण्ड के ग्राम रतनपुर चौकी के बाढ़ प्रभावित स्कूल का निरीक्षण किया। जिले में 5 और 6 जुलाई को हुई भारी बारिश के कारण एक शाला एक परिसर वाले इस आवासीय स्कूल, छात्रावास एवं आंगनबाड़ी के संपूर्ण परिसर में बाढ़ का पानी भर गया था। बाढ़ के कारण स्कूल में रखी सामग्री और बच्चों के बिस्तर आदि खराब हो गये थे। कलेक्टर ने संबंधित अधिकारियों को तत्काल वैकल्पिक व्यवस्था करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि स्थानीय स्तर पर समकक्ष शासकीय अथवा निजी भवन में आवासीय स्कूल का संचालन सुनिश्चित करायें। कलेक्टर ने सहायक आयुक्त जनजातीय कल्याण विभाग को निर्देशित किया कि बाढ़ के पानी में खराब हुई विद्यार्थियों की उपयोगी सामग्री पुनः उपलब्ध करायें। परिसर के पास लगे ट्रांसफार्मर की ऊंचाई बढ़ाने के लिए कलेक्टर ने विद्युत वितरण कंपनी के अधिकारियों को निर्देश दिए। इस दौरान विधायक निवास श्री चैन सिंह वरकड़े, अपर कलेक्टर श्री राजेन्द्र कुमार सिंह, एसी ट्राईबल श्रीमती वंदना गुप्ता सहित संबंधित अधिकारी मौजूद रहे।

नगर परिषद उपचुनाव में चित्त हुई भाजपा कांग्रेस प्रत्याशी की जीत से लहराई खुशी

दैनिक रेवांचल टाइम्स मंडला। जिले के नगर परिषद भुआ बिछिया में दिनांक 07/07/2025 को संपन्न नगर परिषद वार्ड क्रमांक 13 के उपचुनाव का परिणाम 10/07/2025 को घोषित हुआ, जिसमें कांग्रेस अधिकृत प्रत्याशी राजकुमारी अमर धुर्वे ने अपने प्रतिद्वंद्वी को 12 मतों से पराजित कर पार्षद पद पर विजय प्राप्त की। इस जीत से कांग्रेस कार्यकताओं में उल्लास की लहर दौड़ गई। सत्ता पक्ष के धनबल और बाहुबल को मात देते हुए कांग्रेस ने संघर्ष और रणनीति से यह सफलता हासिल की। इस ऐतिहासिक जीत में विधायक एवं जोश सिंह ठाकुर जी के मार्गदर्शन में चुनाव प्रभारी रानू राजपूत, ब्लॉक कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष प्रदीप गोस्वामी एवं समस्त टीम की अथक मेहनत निर्णायक साबित हुई। नगरपरिषद भुआ बिछिया के वार्ड क्रमांक 13 के उपचुनाव में कांग्रेस प्रत्याशी श्रीमती राजकुमारी अमर सिंह धुर्वे जी की ऐतिहासिक जीत, कांग्रेस परिवार के संघर्ष की जीत है। टीम बिछिया के एक एक साथी ने दिन रात मेहनत करके सत्ता बल बाहुबल धनबल को हराकर इस संघर्ष पूर्ण जीत को हासिल किया है। इस उपचुनाव के प्रभारी रानू राजपूत जी, ब्लॉक अध्यक्ष प्रदीप गोस्वामी जी सहित टीम बिछिया के हर एक साथी को बधाई। मै उन सभी लोगों का जिन्होंने प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से इस चुनाव में सहयोग किया उनका आभार व्यक्त करता हूं। भाजपा के पूर्व केंद्रीय मंत्री फग्गन सिंह कुलस्ते, भाजपा के जिला अध्यक्ष प्रफुल मिश्रा ने भी इस उप चुनाव में भाजपा के पक्ष में प्रचार किया लेकिन वह प्रचार काम न आ सका इस जीत का एक मुख्य कारण भाजपा के नेताओं के द्वारा पूर्व में नगर परिषद बिछिया में जो करोड़ों का घोटाला हुआ वह आज भी नगर परिषद के सभी वार्डो के नागरिकों के मन में घर बना चुका है।

प्रदीप गोस्वामी अध्यक्ष ब्लॉक कांग्रेस कमेटी बिछिया

इस नगर परिषद उप चुनाव में कांग्रेस की जीत हुई हमारे एक एक कार्यकर्ता ने बहुत मेहनत से कार्य किया जिसका यह परिणाम है कि आज हम वार्ड क्रमांक 13 के उपचुनाव में विजय हुए।

रणधीर सिंह (रानू) राजपूत,
उपाध्यक्ष नगर परिषद बिछिया एवं उपचुनाव चुनाव प्रभारी बिछिया

आंगनबाड़ी केंद्र निर्माण में लगाया जा रहा है घटिया ईंट, सरपंच, सचिव व इंजीनियर की मिलीभगत

दैनिक रेवांचल टाइम्स अनूपपुर। भ्रष्टाचार के मामलों में सुर्खियां बटोरने वाले जनपद पंचायत अनूपपुर के ग्राम पंचायत बेलियाबड़ी में आंगनबाड़ी केंद्र के निर्माण कार्य में सुरक्षा मानकों को ताक में रखकर काम कराया जा रहा है। महिला एवं बाल विकाश आंगनवाड़ी भवन निर्माण योजना अंतर्गत शासन के सुरक्षात्मक मानकों के अनुसार लगभग 11 लाख की लागत की राशि से आंगनवाड़ी भवन तथा बाउंड्रीवॉल का निर्माण कराया जा रहा है।वैसे तो निर्माण एजेंसी ग्राम पंचायत को निर्माण कार्य कराया जाना था, लेकिन ग्रामीणों ने बताया कि सरपंच को आज तक यहां नहीं देखा गया है।काम कौन करा रहा है, इसकी भी उन्हें जानकारी नहीं है। निर्माण कार्य में गुणवत्ता नदारद है। स्टीमेट के विपरीत छड़ से कालम व बीम तैयार किए गए हैं। कालमों में रिंग जो किसी निर्माण की रीढ़ होती है उसे भी मनमाना लगाया जा रहा है। वैसे विकासखंड का यह एकमात्र आंगनबाड़ी भवन नहीं है, जिसका निर्माण गुणवत्ताविहीन किया जा रहा है।कई ग्रामों में हो रहे निर्माण इसी तर्ज पर हो रहे है।

दीवार में लग रही घटिया ईंट

आंगनबाड़ी केंद्र के भवन के निर्माण में घटिया क्वालिटी की ईंट लगाकर खानापूर्ति की जा रही है।ग्रामीणों के अनुसार गुणवत्ताविहीन हो रहे कार्य का विरोध होने के बाद भी निर्माण एजेंसी मनमानी कर रही है।विभागीय अधिकारियों तक शिकायतें भी पहुंचती हैं, लेकिन जांच में खानापूर्ति व लेन-देन कर मामला रफा-दफा कर दिया जाता है।भवन के दीवार निर्माण कार्य में भी घुली ईंटों का उपयोग कर गंभीर लापरवाही बरती जा रही है। ग्रामीणों का कहना है कि यह स्थिति बच्चों की सुरक्षा के लिए खतरनाक साबित हो सकती है। स्थानीय लोगों का यह भी आरोप है कि अधिकारियों की अनदेखी से निर्माण एजेंसी मनमानी कर रही हैं, जिससे विकास कार्य प्रभावित हो रहा है।

इंजीनियर की अनदेखी हो रहा घटिया निर्माण

ज्ञात हो कि सरकार द्वारा ग्राम पंचायतों में इंजीनियर नियुक्त किये हैं, ताकि कोई निर्माण हो तो उसकी गुणवत्ता देख सकें,लेकिन यहां तो बिना जांच के खुलेआम घटिया निर्माण हो रहा है और वे इधर झांकना भी मुनासिब नहीं समझते, इससे सरपंच और सचिव के हौसले बुलंद हैं।सूत्रों का कहना है कि यह सब इन्ही जिम्मेदारों के आपसी सांठगांठ और कमीशन के चलते हो रहा है,यदि सही जांच हो तो पंचायत में कई और मामले भी उजागर होंगे। ग्राम पंचायत में नाडेफ,सोख्ता टैंक भी बने हैं,उसमे भी लापरवाही बरती गई है। भ्रष्टाचार के चलते सही मापदण्ड का पालन नहीं किया गया है।जिसको लेकर स्थानीय लोगो ने जल्द ही जिला कलेक्टर से शिकायत की बात कही गई है।

इनका कहना है।

इस मामले में जनपद पंचायत के इंजीनियर दुर्गेश अग्रवाल को उनके मोबाइल नम्बर पर कॉल किया गया तो उन्होंने कॉल रिसीव नही किया।

एक घंटे में कुछ अधिकारियों ने खा लिए 14 किलो ड्रायफ्रूट्स, पी ली 5 किलो चीनी डालकर 5 लीटर दूध की चाय

दैनिक रेवांचल टाइम्स शहडोल। जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत आयोजित एक कार्यक्रम में मध्यप्रदेश के आला अधिकारियों के द्वारा की गई अनियमितताओं का मामला प्रकाश में आया है। शहडोल के गोहपारू ब्लॉक के भदवाही ग्राम पंचायत में आयोजित इस कार्यक्रम के दौरान, अधिकारियों ने मात्र एक घंटे में 14 किलो ड्रायफ्रूट्स का सेवन कर लिया, जिसका खर्च जनता के पैसों से उठाया गया। इस कार्यक्रम में कलेक्टर, जिला पंचायत सीईओ, एसडीएम और अन्य कई आला अधिकारी शामिल हुए थे। इन अधिकारियों ने 5 किलो काजू, 6 किलो बादाम और 3 किलो किसमिस खाकर एक अनोखा रिकॉर्ड बनाया। इसके अलावा, उन्होंने 6 लीटर दूध में 5 किलो शक्कर मिलाकर चाय का भी सेवन किया। इस आयोजन का आयोजन भदवाही ग्राम पंचायत द्वारा किया गया था, जिसके लिए दी गई राशि का भुगतान विवादित बिलों के माध्यम से किया गया है। भदवाही ग्राम पंचायत में जल चौपाल का

आयोजन किया गया, जिसमें अधिकारी और ग्रामीण दोनों शामिल हुए। पता चला है कि इस आयोजन में सर्व किया गया भोजन खिचड़े, पूड़ी और सब्जी के रूप में था, जबकि अधिकारियों के नाम पर जो बिल जारी किए गए उसमें ड्रायफ्रूट्स का खर्च दिखाया गया। यह भी चर्चा है कि अधिकारियों के आगमन के लिए ग्राम पंचायत ने उचित व्यवस्था की थी, लेकिन यह सब सरकारी धन के दुरुपयोग की कहानी बयां करता है। सरकारी दस्तावेजों के अनुसार, 13 किलो ड्रायफ्रूट्स के लिए 19,010 रुपये का भुगतान किया गया, जिसमें अन्य सामग्री जैसे 30 किलो नमकीन और 20 पैकेट बिस्कुट का भी खर्च शामिल है। इस मामले में सबसे चौंकाने वाला तथ्य यह है कि काजू की कीमत में भारी अंतर देखा गया है। एक किलो काजू 1000 रुपये में खरीदा गया, जबकि उसी दिन एक अन्य विक्रेता से काजू 600 रुपये प्रति किलो में उपलब्ध था। मुद्रिका सिंह, प्रभारी जिला पंचायत सीईओ ने कहा कार्यक्रम में मैं खुद मौजूद था, लेकिन मुझे जानकारी नहीं है पता करता हूं।

खाद मामले में विधायक ने समर्थको के साथ किया सड़क जाम

दैनिक रेवांचल टाइम्स अनूपपुर। जिले के पुष्पराजगढ़ में किसानों को खाद्य नही मिलने के मुद्दे पर पुष्पराजगढ़ के कांग्रेस विधायक फूंदेलाल सिंह मार्को ने किसानों और समर्थको के साथ चक्का जाम कर दिया। गुरुवार को दोपहर में हो रहीं रिमझिम बरसात के बीच कांग्रेस विधायक अनूपपुर राजेंद्रग्राम मार्ग में समर्थकों के साथ बैठ गए, जिससे सडक पर दोनों ओर से जाम लग गया। पुष्पराजगढ़ विधायक फुंदेलाल सिंह मार्को और आंदोलन कारियों का कहना है कि जब तक किसानों को खाद नही मिलेगा तब तक आंदोलन चक्काजाम जारी रहेगा, दोनों तरफ भारी गाड़ियों का जमावड़ा रहा मौके पर राजेन्द्रग्राम थाना प्रभारी व पुष्पराजगढ़ एसडीएम सुधाकर सिंह बघेल पुलिस बल के साथ मौजूद थे। इस समय बारिश पर्याप्त मात्र में हो गई है, किसान अपने खेतों में रोपा लगाने और धान की बोवाई करने में लगे हुए है, जिले में यूरिया की आवश्यकता है, पुष्पराजगढ़ में किसानों को यूरिया नहीं मिल पा रहा है, जिससे किसान आंदोलित हो रहे है। इससे पहले भी किसान खाद के सिलसिले में आंदोलन कर अपनी नाराजगी जाहिर कर चुके है।

आल इंडिया स्ट्राइक के समर्थन में मजदूर एवं किसानों का जिला अनूपपुर में दिखा दम खम- जुगुल राठौर

दैनिक रेवांचल टाइम्स अनूपपुर। संयुक्त ट्रेड यूनियन के आह्वान पर ऑल इंडिया स्ट्राइक के समर्थन में सीटू से संबद्ध यूनियन आंगनवाड़ी कार्यकर्ता एवं सहायिका एकता यूनियन, आशा उषा सहयोगिनी यूनियन, मध्यान भोजन कर्मी युनियन,कोयला श्रमिक संघ जमुना कोतमा एवं हसदेव एरिया,अखिल भारतीय जनवादी महिला समिति, मध्य प्रदेश किसान सभा , आदिवासी महासभा तथा संयुक्त ठेकेदारी मजदूर यूनियन के बैनर तले जिला मुख्यालय अनूपपुर में हजारों के तादाद में रैन बसेरा के समक्ष धरना प्रदर्शन एवं आम सभा कर तहसीलदार ईश्वर प्रधान को ज्ञापन सोपा । ज्ञापन में स्थानीय एवं राष्ट्रीय मांगों से संबंधित ज्ञापन कलेक्टर जिला अनूपपुर एवं नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री नई दिल्ली को संबोधित ज्ञापन दिया। आम सभा को मुख्य वक्ता मध्य प्रदेश किसान सभा के प्रांतीय महासचिव कामरेड अखिलेश यादव एवं अखिल भारतीय जनवादी महिला समिति के प्रांतीय अध्यक्ष कामरेड नीना शर्मा ने संबोधित किया। कामरेड अखिलेश यादव ने सभा को संबोधित करते हुए बीजेपी के नेतृत्व वाली मध्य प्रदेश के मोहन यादव सरकार एवं नरेंद्र मोदी सरकार का जमकर आलोचना करते हुए सरकार को किसान विरोधी, मजदूर विरोधी, महिला विरोधी एवं आमजन विरोधी बताया। उन्होंने कहा कि

यह सरकार कॉर्पोरेट घरानों के हित साधना करने पर तुली हुई है, और देश को कर्ज में डूबा दिया है । उन्होंने सरकार को चेतावनी देते हुए कहा कि अभी भी वक्त है सरकार गहरी निद्रा से जाग कर देश के विकास की बुनियाद रखने वाले मजदूर एवं किसानों के हित की काम करें। वहीं महिला नेत्री कामरेड नीना शर्मा ने समाज में महिलाओं को बराबरी का अधिकार दिलाएं जाने पर जोर दिया।

नियम का उल्लंघन करने पर राजेश मेडिकल सहित 6 दवा दुकानों के लाइसेंस हुए रद्द

दैनिक रेवांचल टाइम्स अनूपपुर। औषधि एवं प्रसाधन सामग्री नियमावली 1945 के नियमों का उल्लंघन पाए जाने पर जैतहरी स्थित मेसर्स लाइफ केयर मेडिकोज, अनूपपुर स्थित मेसर्स आकांक्षा मेडिकल स्टोर, कोतमा कालरी भालूमाड़ा स्थित मेसर्स रियान मेडिकोज, तहसील जैतहरी के आदर्श ग्राम सिवनी स्थित मेसर्स आर के मेडिकोज, कोतमा स्थित मेसर्स राजेश मेडिकल स्टोर्स तथा अनूपपुर स्थित मेसर्स अमृत फार्मा का आकस्मिक निरीक्षण औषधि निरीक्षक अनूपपुर द्वारा किया गया था। निरीक्षण के दौरान मेडिकल स्टोर्स में औषधि एवं प्रसाधन सामग्री नियमावली 1945 के नियमों का उल्लंघन पाए जाने पर जाँच प्रतिवेदन तैयार कर औषधि अनुज्ञापन प्राधिकारी खाद्य एवं औषधि प्रशासन अनूपपुर को प्रेषित किया गया था। जिसमें औषधि अनुज्ञापन प्राधिकारी द्वारा संबंधित मेडिकल स्टोर्स के संचालकों को कारण बताओ नोटिस जारी कर स्पष्टीकरण मांगा गया था। संचालकों को जारी नोटिस का जवाब समाधानकारक एवं संतोषजनक नहीं पाए जाने के कारण औषधि

अनुज्ञापन प्राधिकारी खाद्य एवं औषधि प्रशासन जिला अनूपपुर द्वारा मेसर्स राजेश मेडिकल स्टोर्स के संचालक को स्वीकृत थोक औषधि विक्रय अनुप्तियां निरस्त एवं स्वीकृत फुटकर औषधि विक्रय अनुज्ञप्तियां 15 दिवस के लिए निलंबित की गई है। इसी प्रकार मेसर्स लाइफ केयर मेडिकोज के संचालक को स्वीकृत फुटकर औषधि विक्रय अनुज्ञप्तियां 10 दिवस के लिए, मेसर्स आकांक्षा मेडिकल स्टोर के संचालक को स्वीकृत फुटकर औषधि विक्रय अनुज्ञप्तियां 7 दिवस के लिए, मेसर्स रियान मेडिकोज के संचालक को स्वीकृत फुटकर औषधि विक्रय अनुज्ञप्तियां 5 दिवस के लिए, मेसर्स आर के मेडिकोज के संचालक को स्वीकृत फुटकर औषधि विक्रय अनुज्ञप्तियां 7 दिवस के लिए तथा मेसर्स अमृत फार्मा के संचालक को स्वीकृत फुटकर औषधि विक्रय अनुज्ञप्तियां 5 दिवस के लिए निलंबित किए गए हैं। निलंबन अवधि में संचालकों को किसी भी प्रकार से औषधियों का क्रय-विक्रय नही किए जाने व मेडिकल स्टोर का संचालन बंद रखे जाने के आदेश दिए गए हैं।

चोरों के हौसले बुलंद फिर हुई चोरी की वारदात, चोर पुलिस की पकड़ से बाहर- श्री कांत शुक्ला

दैनिक रेवांचल टाइम्स अनूपपुर। कोयला मजदूर सभा के क्षेत्रीय अध्यक्ष श्रीकांत शुक्ला ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कहा कि जमुना कालोनी स्थित गुरुद्वारा के बगल से इ/24 नंबर मकान जो राजेश शर्मा के नाम आवंटित है दिनांक 5 जुलाई 2025 को दिन में 12 बजे से 4 बजे के बीच जब राजेश शर्मा ओसीएम में और उनकी श्रीमती जमुना हायर सेकंडरी स्कूल में प्रिंसिपल है, दोनों ड्यूटी में थे, इसी बीच अज्ञात चोरों द्वारा चोरी की वारदात को अंजाम दिया गया, जिसमें चोरों द्वारा 50 हजार रुपए नगदी और एक सोने का 4 ग्राम का लटकन चोरी कर लिया गया, जिसकी सूचना भालूमाड़ा पुलिस को को दी गई है, सी सी टी वी फुटेज भी उपलब्ध कराया गया, लेकिन आज तक पुलिस चोरों का पता नहीं लगा पाई है, इसी तरह से जमुना कालोनी में 7 से 8 माह पूर्व दो नर्स के मकान में भी चोरी की वारदात हुई थी, जिसकी शिकायत थाना भालूमाड़ा में की गई थी लेकिन चोरों का पता आज तक नहीं चल पाया है। श्रमिक नेता श्रीकांत शुक्ला ने पुलिस अधीक्षक से आग्रह किया है कि भालूमाड़ा थाना क्षेत्र में चोरों के हौसले इस कदर बुलंद हो चुके है कि

आए दिन चोरी की घटना को अंजाम दे रहे है। अतः स्वतः संज्ञान लेकर कार्यवाही करने की आवश्यकता है, ताकि चोरों को पकड़कर सख्त कार्यवाही की जा सके, जिससे चोर दोबारा चोरी करने की हिम्मत न जुटा सके।पुलिस अधीक्षक को अवगत कराया जा रहा है कि राजेश शर्मा के यहा हुई चोरी का सीसीटीसी फुटेज भी थाना भालूमाड़ा को दिया गया है, जिसमें चोर चोरी करते स्पष्ट दिख रहे है।

गुरू पुर्णिमा विशेष, हिमांशु तिवारी जगा रहे शिक्षा की अलख, गरीब बच्चों को दे रहे निःशुल्क शिक्षा

दैनिक रेवांचल टाइम्स उमरिया। गरीब परिवार के बच्चों को सेवा भाव से शिक्षित बनाने का जुनून समाज के लिए प्रेरणादायक है। उमरिया जिले एक युवा हिमांशु तिवारी है जो पिछले 6 साल से गरीबों के बीच शिक्षा की अलख जगा रहे हैं। वे एलकेजी से लेकर 8वीं कक्षा तक के बच्चों को मुफ्त में पढ़ाने के साथ ही उन्हें मुफ्त पाठ्य सामाग्री भी उपलब्ध करा रहे हैं। इसमें ऐसे परिवार के बच्चे शामिल हैं जिनके पास स्कूल भेजने से लेकर घर में जरूरत की सामग्री भी नहीं है। इतना सामर्थ्य ही नहीं कि वो कुछ खरीद सकें।गरीब और असहाय बच्चों के लिए शिक्षा के साथ-साथ पढ़ने लिखने की भी सामग्री का वितरण करते हैं।गरीब बच्चों का जीवन संवारने के लिए हर संभव प्रयास किया जा रहा है। बच्चों के विकास में सबसे बड़ी बाधा शिक्षा बन रही थी, जिसको युवाओं द्वारा दूर किया जा रहा है। गरीब तबके के बच्चों को इन युवाओं द्वारा शिक्षा सामग्री भी उपलब्ध कराई जा रही है। इसके साथ ही बच्चों को

उत्साहवर्धन भी किया जा रहा है। हिमांशु तिवारी ने कहा कि गांव व वार्डों में पहुंचकर गांव की पाठशाला के नाम से आयोजित कर ट्यूशन देकर बच्चों को निःशुल्क पढ़ाया जा रहा है। वहीं जिन बच्चों का कोरोना के स्कूल बंद होने के कारण पढ़ाई से मन टूट गया था ।उन्हें भी शिक्षा के प्रति प्रोत्साहित किया गया । साथ जिले के विभिन्न स्थानों पर निशुल्क कोचिंग क्लास आयोजित कर विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान किया जा रहा है।

श्रद्धा के साथ धूमधाम से मनाई गई गुरु पूर्णिमा, आश्रमों में विशेष पूजन, हवन व सत्संग का हुआ आयोजन

दैनिक रेवांचल टाइम्स अनुपपुर। पवित्र तीर्थस्थल, जहां नर्मदा नदी का उद्गम स्थल है, वहां गुरु पूर्णिमा का पर्व पारंपरिक श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर दूर-दूर से श्रद्धालु, साधु-संत और पर्यटक यहां पहुंचे और अपने-अपने गुरुओं को नमन किया। सुबह से ही मंदिरों और आश्रमों में विशेष पूजन, हवन और सत्संग का आयोजन हुआ। नर्मदा मंदिर परिसर में भक्तों की भीड़ उमड़ पड़ी। श्रद्धालुओं ने नर्मदा स्नान कर पुण्य लाभ अर्जित किया और फिर गुरुओं की पूजा कर आशीर्वाद प्राप्त किया। विशेष रूप से कपिल धारा, दुर्गा धारा, और नर्मदा मंदिर में भारी संख्या में श्रद्धालु एकत्र हुए। कई आश्रमों में गुरु परंपरा पर प्रवचन हुए और भंडारे का आयोजन किया गया, जिसमें हजारों श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया। गुरु पूर्णिमा के इस पावन अवसर पर अमरकंटक का वातावरण

भक्तिमय हो गया। साधु-संतों ने गुरु की महिमा का बखान करते हुए कहा कि ह्मगुरु वह दीपक है जो अज्ञान के अंधकार को दूर कर आत्मज्ञान का प्रकाश देता है। यह आयोजन न सिर्फ आध्यात्मिक दृष्टि से, बल्कि सांस्कृतिक रूप से भी अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। स्थानीय प्रशासन द्वारा सुरक्षा और व्यवस्था के लिए विशेष इंतजाम किए गए थे, जिससे श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा न हो। गुरु पूर्णिमा पर अमरकंटक की यह भव्यता देखने लायक रही, जिसने एक बार फिर भारत की गुरु-शिष्य परंपरा की गरिमा को जीवंत कर दिया। श्री कल्याण आश्रम, श्री मार्कंडेय आश्रम एवं श्री शांति कुटि आश्रम, अमरकंटक में धूमधाम से गुरु पूर्णिमा मनाई गई। गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर श्री मार्कंडेय आश्रम, अमरकंटक में भक्ति, श्रद्धा और आध्यात्मिक ऊर्जा से ओत-प्रोत वातावरण में विशेष आयोजन संपन्न हुआ। इस अवसर पर आचार्य महामण्डलेश्वर रामकृष्णानंद जी महाराज एवं तपस्वी बाबा कल्याण दास जी महाराज ने बड़ी संख्या में उपस्थित श्रद्धालु भक्तों को गुरु पूर्णिमा की हार्दिक शुभकामनाएँ एवं आशीर्वाद प्रदान किया।

संपादकीय

कहां जानी महामहिम की अहमियत

इस बार हिमाचल के उपमुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री ने यह बात कही, तो जिक्र बदल गया, वरना यह तथ्यों से भरा अनुभव है कि महामहिम दलाईलामा की उपस्थिति के कारण धर्मशाला शहर क्या एक अंतरराष्ट्रीय डेस्टिनेशन बन गया है। आश्चर्य यह कि हिमाचल के मंच सिर्फ कह देने के लिए कह देते हैं, वरना दलाईलामा के संदर्भों में हमारे पर्यटन की तासीर बदल जाती। दूर जाने की जरूरत नहीं, कुछ दशक पहले जब महामहिम को विश्व शांति पुरस्कार मिला, तो उनकी आभा में एक हिमालय उत्सव का श्रीगणेश मकलोडगंज में हुआ। हैरानी यह कि अब विधायकों के महिमामंडन में ऐसी जगह ऐसे समारोह शिफ्ट हो गए, जहां सिर्फ पंजाबी गायकों के बागीचे में लाखों खर्च होते हैं। धर्मशाला के जिस वैभव का जिक्र महोदय उपमुख्यमंत्री कर रहे हैं, वहां हिमालय उत्सव ढूंढे नहीं मिलता। जिस शहर में अंतरराष्ट्रीय हस्तियां पूजनीय दलाईलामा से मिलने आती हैं, वहां उनकी पहली भेंट सदाबहार गंदगी, ट्रैफिक जाम, अव्यवस्था, अतिक्रमण, सूटा-सट्टा और प्रकृति की डड्डियों के ढांचे से होती है। राजनीति ने बस स्टैंड की बीओटी को मुर्दाघर बना दिया, जहां दफन हैं मोटे और लंबे देवदार के पेड़। पार्किंग के नाम पर होटल खड़ा कर देने वालों को सियासी पनाह भी गजब कि सुप्रीम कोर्ट की हदें अब इसी अंतरराष्ट्रीय शहर में लगती हैं। ऐसे गुनाह से तो बेवफाई भी अच्छी, लेकिन यहां तो वर्षों से डल झील की गाद ने सारी बस्ती उजाड़ दी। एक जलप्रपात था, उसके पानी को इतना खींच लिया कि यह आलम अब लुप्तप्राय होने के कगार पर है। जरा बताएं महामहिम के पक्ष में ऊंची बातें करने वाले हिमाचली नेताओं और सत्ता पक्ष के अहम किरदारों ने अंतरराष्ट्रीय छवि के मुताबिक उनके गृह शहर में किया क्या। पर्यटन विभाग ने अपनी बेशकीमती 65 कनाल भूमि के ऐसे टुकड़े किए कि क्लब हाउस भी सराय सा लगता है। दोषी स्थानीय लोग और होटल व्यवसायी भी कम नहीं। यहां वन भूमि पर नागरिक अधिकार चलता है। ऊंची इमारतों के बहुत नीचे इनसानों का कद कितना बौना हो सकता है, यह हम पर्यटन की बहारों में देखते हैं। अंतरराष्ट्रीय दिखने वाले शहर को अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था भी तो चाहिए। दलाईलामा का 90वां जन्मदिन मनाने आए एक लाख से अधिक लोगों से ही पूछ लें कि क्या यहां किसी अंतरराष्ट्रीय शहर की पूंछ भी दिखाई देती है। दरअसल हमारी योजनाएं सत्ता के किरदार में पूजी जाती हैं, इसलिए पर्यटन इकाइयों के कबाडखाने में कई नेता गुनाहगार हैं। सिर्फ एडीबी का पैसा पर्यटन को स्वर्ग नहीं बनाएगा, बल्कि स्वर्ग जैसे हिमाचल को बचाने की दुरुस्ती चाहिए। इसी धर्मशाला में तमाम टैक्सियों में घूमकर, रेस्तरां में खाकर और सुकून के पल तलाशकर मालूम हो जाएगा कि हम तो राष्ट्रीय स्तर का महत्त्व भी नहीं जानते। इससे पहले किसी ने कहा था कि पर्यटन के ब्रांड होंगे दलाईलामा। है हिम्मत तो कांगड़ा के एयरपोर्ट विस्तार को केंद्र की भाजपा भी अपना जिगर दिखाए। आए थे केंद्रीय मंत्री किरण रिजिजू इस बार यहां, तो कह देते कि हिमाचल को दलाईलामा व तिब्बती पर्यटन का डेस्टिनेशन बनाएंगे। कह देते कि कांगड़ा एयरपोर्ट को महामहिम दलाईलामा के नाम पर अंतरराष्ट्रीय मानदंडों पर बनाएंगे। हकीकत यह है कि भारत के लोकतांत्रिक व महात्मा गांधी के अहिंसा के सिद्धांत का पुजारी वर्षों से मकलोडगंज की वादियों से तप कर विश्व को यहां आमंत्रित कर रहा है, लेकिन हम इस महत्त्व को न पर्यटन और न ही संस्कृति में समझे। अगर धर्मशाला-लाहौल-किन्नौर तक एक बौद्ध सर्किट भी बना देते, तो कालचक्र जैसे समारोहों की अधोसंरचना जोगिंद्रनगर जैसे मध्य स्थल पर उभर आती। केंद्रीय विश्वविद्यालय के धर्मशाला को अहमियत दी होती, तो यहां एक अंतरराष्ट्रीय अध्ययन का विश्व विख्यात केंद्र अब तक विकसित हो चुका होता। दलाईलामा के सम्मान में विश्व शांति स्थल विकसित करके यहां वैश्विक स्तंभ स्थापित किया जा सकता था।

अतार्किक विकल्प: चीनी आपूर्ति वर्चस्व

औद्योगिक नीति को पुनर्स्थापित करने की दरकार

पहले दुर्लभ खनिजों के निर्यात पर प्रतिबंध लगाकर भारतीय इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) निमार्ताओं को मुश्किल में डाला गया था। अब चीन ने विशेष उर्वरकों पर रोक लगा दी है। भारत में आने वाली जर्मनी की सुरंग-बोरिंग मशीन कथित तौर पर चीन में फंसी हुई है जिसके लिए निर्यात मंजूरी मिलने का इंतजार किया जा रहा है। अब इससे ज्यादा क्या होगा? भारत, दवाओं का एक बड़ा निमार्ता देश है और अपनी प्रमुख दवा सामग्री का 80 फीसदी चीन से आयात करता है। सवाल यह है कि अगर इस पर भी रोक लग गई तब क्या होगा? चीन को भारत से किसी भी महत्त्वपूर्ण चीज का आयात करने की जरूरत नहीं है जबकि भारत को अपनी अर्थव्यवस्था के विभिन्न हिस्से को चलाने के लिए हर साल चीन से 115 डॉलर अरब के सामान की जरूरत होती है। वैश्वीकृत अर्थव्यवस्था में राष्ट्र-निर्माण के लिए विनिर्माण को कम महत्त्वपूर्ण मानने वाले सभी लोगों को अब यह समझाना होगा कि चीन ने ऐसी स्थिति कैसे बना ली है कि वह किसी भी देश को नियंत्रित कर सकता है। इसका जवाब निश्चित रूप से स्थानीय विनिर्माण बढ़ाना है खासतौर पर सभी महत्त्वपूर्ण चीजों का और यह निश्चित रूप से हैरानी की बात होगी। करीब 40 साल पहले, अर्थव्यवस्था में सुधार का प्रमुख आर्थिक नुस्खा, मुक्त-बाजार सिद्धांतों का एक मिश्रण था जिसमें खुली प्रतिस्पर्धा, न्यूनतम सरकारी हस्तक्षेप, कम शुल्क बाधाएं और वित्तीय उदारीकरण जैसे पहलू शामिल थे। इसके कारण सरकार की योजनाओं पर मुक्त बाजार विचारधारा की निर्णायक बढ़त देखी गई। खैर, अब यह सोच पूरी तरह से बदल गई है। टैरिफ बाधाएं बढ़ गई हैं और सरकारी हस्तक्षेप आर्थिक ताकतों को मजबूती से आकार दे रहा है। अमेरिका के राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप, स्टील से लेकर इलेक्ट्रॉनिक्स और दवाओं तक का विनिर्माण अपने देश में करना चाहते हैं। उनके पूर्ववर्ती राष्ट्रपति जो बाइडन ने सेमीकंडक्टर और हरित प्रौद्योगिकियों के लिए भारी सब्सिडी दी थी। ब्रिटेन ?विनिमार्ताओं के ऊर्जा बिलों पर सब्सिडी देने पर विचार कर रहा है वहीं भारत ने 17 क्षेत्रों में स्थानीय विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहन की पेशकश की है। इंडोनेशिया, विनिर्माण के क्षेत्र में विदेशी निवेश के तहत स्थानीय सामग्री अनिवार्य कर रहा है और अपने विशाल निकल भंडार के साथ यह इलेक्ट्रिक वाहनों का प्रमुख केंद्र बनने की आकांक्षा रखता है। औद्योगिक नीति का विचार एक वक्त में सरकार की अक्षमता और भ्रष्टाचार की याद दिलाता था। वर्ष 1950 और 1970 के दशक के बीच, भारत की औद्योगिक नीति वास्तव में मूल्य नियंत्रण,

लाइसेंसिंग, आयात प्रतिबंध और सार्वजनिक क्षेत्र के दबदबे का मिश्रण थी और यह एक ऐसा मॉडल था जिसने उद्यमशीलता को बाधित किया, अक्षमताओं को बढ़ावा दिया और भ्रष्ट सरकारी उद्यमों को समर्थन दिया जिन्होंने सरकारी खजाने को खाली कर दिया। ऐसे में सवाल यह है कि फिर औद्योगिक नीति और इसके मुख्य घटक, विनिर्माण को अब वृद्धि के संदर्भ में क्यों तरजीह दी जा रही है? इसका जवाब है चीन। क्या आपने यह नहीं देखा कि कैसे सोची-समझी औद्योगिक नीतियां किसी देश को बदल सकती हैं जैसे विश्व युद्ध से पहले जापान और बाद में ताइवान और दक्षिण कोरिया बदला? एक लंबी अवधि की औद्योगिक नीति कैसे तैयार की जाए और क्रियान्वित की जाए, इसका एक शानदार उदाहरण चीन पेश करता है। इसी नीति के बलबूते उसने वैश्विक स्तर के विनिर्माण के 32 फीसदी हिस्से पर नियंत्रण कर लिया है, जिससे सबसे शक्तिशाली राष्ट्र भी इसकी ताकत के सामने कमजोर हो गए हैं। इन रुझानों में आखिर भारत कहां मुफीद बैठता है? प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मेक इन इंडिया अभियान के तहत 2014 में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में विनिर्माण की हिस्सेदारी 15 फीसदी से बढ़ाकर 2025 तक 25 फीसदी करने का वादा किया गया था, जिसका उद्देश्य रोजगार सृजन और निर्यात वृद्धि था। लेकिन प्रचार के नारों और रोडशो के अलावा कुछ खास नहीं हुआ। इस दिशा में एक और व्यवस्थित प्रयास छह साल बाद, मार्च 2020 में किया गया जब भारत ने तीन क्षेत्रों के लिए उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना शुरू की, जिसे बाद में 17 क्षेत्रों तक बढ़ाया गया। इसके पीछे मकसद घरेलू विनिर्माण क्षमता को 30 लाख करोड़ रुपये तक बढ़ाना, आयात की जगह लेना और 60 लाख नई नौकरियों के मौके तैयार करना था। पीएलआई योजना ने मोबाइल फोन असेंबल करने और दवा सामग्री के क्षेत्र में कुछ सफलता दिलाई है। फिर भी, घरेलू स्तर पर मूल्यवर्धन कम है, जिसमें प्रमुख घटक अब भी आयात किए जा रहे हैं। जनवरी 2024 में एक सरकारी विज्ञप्ति में दावा किया गया था कि इसके तहत रोजगार के 6,78,000नए मौके तैयार हुए। हालांकि यह एक ऐसे देश में बेहद कम संख्या है जहां सालाना 1 करोड़ से अधिक युवा श्रम बाजार में प्रवेश करते हैं। जीडीपी में विनिर्माण क्षेत्र की हिस्सेदारी वास्तव में और कम हो गई है और यह वर्ष 2020 के 15.4 फीसदी से घटकर 2025 में 14.3 फीसदी रह गई है। रॉयटर्स की एक जांच में आंतरिक सरकारी दस्तावेजों का हवाला दिया गया था जिससे पता चला है कि अक्टूबर 2024 तक पीएलआई आवंटित फंड का 8 फीसदी से भी कम हिस्सा वितरित हुआ था। इसके अलावा, योजना के दो-तिहाई लक्ष्य पूरे नहीं हो पाए थे। आखिर ऐसा क्यों हुआ? पीएलआई योजना में गलत प्राथमिकताओं पर काम किया जा रहा है। दरअसल, जिन बुनियादी बातों पर पहले ध्यान देना चाहिए, वे हैं शिक्षा और अनुसंधान की गुणवत्ता, साथ ही व्यापार करने में आने वाली भारी लागतें जिनमें लॉजिस्टिक्स, ऊर्जा, कर और उपकर, रिश्वत, राज्य व केंद्रीय कानून और लालफीताशाही शामिल हैं। यही वजह है कि चमड़ा, कपड़े, हस्तशिल्प और आभूषण जैसे अधिक श्रम वाले क्षेत्र भी बड़े पैमाने पर विकसित नहीं हो पाए हैं। यह योजना हमें याद दिलाती है कि शॉर्टकट तरीके से औद्योगिक क्षमता नहीं तैयार की जा सकती है। असली विनिर्माण तंत्र बनाने में वर्षों के बुनियादी सुधार की दरकार होती है। भारत के लिए इस नींव को तैयार करने के प्रयास कम ही हुए हैं। वर्ष 2000 के दशक के मध्य में, कांग्रेस के नेतृत्व वाली सरकार ने थाईलैंड और मलेशिया जैसे देशों की निर्यात-आधारित सफलता की नकल करने की कोशिश की, जिसके लिए विशेष आर्थिक क्षेत्र (सेज) को बढ़ावा दिया गया। लेकिन यह पहल भ्रष्टाचार, विवाद और घोटालों में उलझ कर आखिरकार नाकाम हो गई। इसमें नागपुर के पास भगोड़े कारोबारी मेहुल चोकसी को 1,000 एकड़ जमीन का आवंटन जैसे उदाहरण भी शामिल हैं। भारत ने अक्टूबर 2021 में गति शक्ति योजना शुरू किए जाने तक व्यवस्थित रूप से लॉजिस्टिक्स लागत कम करने की कभी कोशिश नहीं की। लॉजिस्टिक्स लागत कम करने (जो अभी जीडीपी का 13-14 फीसदी है जबकि चीन में यह 8-10 फीसदी है) के अलावा, इसका उद्देश्य आर्थिक क्षेत्रों के साथ कनेक्टिविटी बढ़ाना भी है। अगर भारत में विनिर्माण क्षेत्र तरक्की करता तब यह रोजगार की कमी और गरीबी की दोहरी चुनौतियों से निपट सकता था। सेवाओं के विपरीत, विनिर्माण क्षेत्र में बड़ी संख्या में अकुशल और अर्ध-कुशल श्रमिक खप सकते हैं। लेकिन इस मजबूत आधार को बनाने के बजाय, सरकार ने कई नकद हस्तांतरण और कल्याणकारी योजनाओं पर ध्यान केंद्रित किया है। हालांकि ये योजनाएं अशांति-हलचल रोक सकती हैं और राजनीतिक लाभ दे सकती हैं पर ये काम करने की प्रेरणा भी कम करती हैं, खासतौर पर ग्रामीण भारत के क्षेत्र में। विनिर्माण क्षेत्र की कंपनियां लगातार कामगारों की कमी की शिकायत करती हैं, जबकि देश में बेरोजगारी बहुत अधिक है। वास्तव में भारत की युवा आबादी के होने के फायदे तेजी से आबादी के बोझ में तब्दील हो रहे हैं। छोटे उद्योग क्षेत्रों की स्थिति बेहद खराब है, जहां ज्यादातर लोग काम करते हैं और ये एक दमघोंटू माहौल में संघर्ष करते हुए दिख रहे हैं। कोई भी औद्योगिक नीति तभी अच्छी होती है जब उसे ठीक तरीके से लागू किया जाए और उसे सहारा देने वाले दूसरे सुधार भी हों। यह बात 40 साल पहले भी उतनी ही सच थी जितनी आज है।

राशिफल

मेष राशि :- तनाव, रोग, उदर विकार, लाभ, राजभय, दाम्पत्य जीवन पूर्ण संतोष प्रद बना रहेगा।

वृष राशि :- शत्रुभय, सुख, मंगल कार्य, विरोध, मामले-मुकदमे में प्रायः जीत की सम्भावना बनेगी।

मिथुन राशि :- कुसंग, हानि, रोग, भय, यात्रा, उद्योग, व्यापार की स्थिति लाभ-हानि ही बनी रहेगी।

कर्क राशि :- पराक्रम, कार्यसिद्ध, व्यापार लाभखेती व गृह कार्य में व्यवस्था निश्चय होवेंगी।

सिंह राशि :- तनाव, प्रवास से बचें, विरोधी, चिन्ता, उद्योग तथा व्यापार से लाभ होवेंगा।

कन्या राशि :- भूमि लाभ, स्त्री सुख, हर्ष, उद्योग व्यापार में अड़चने होगी, कार्य बनेंगे।

तुला राशि :- प्रसंग, वाहन भय, भूमि लाभ, कलह, व्यर्थ तनाव तथा खेती में परेशानी होवेंगी।

वृश्चिक राशि :- कार्य सिद्ध, विरोध, लाभ, हर्ष, कष्ट होगा, व्यापार में सुधार, तथा खर्च होवेगा।

धनु राशि :- यात्रा में हानि, मातृ-पितृ कष्ट, व्यय, लिखा पढ़ी से लाभ होगा।

मकर राशि :- शुभ कार्य, वाहनादि रोग भय, नौकरी की स्थिति सामान्य बनी ही रहेगी।

कुंभ राशि :- अभीष्ट कार्य सिद्धी, राजभय, कार्य तथा धार्मिक व कुछ अच्छे कार्य बनेंगे।

मीन राशि :- तनाव, उदर रोग, विरोध, मित्र लाभ, राजभय, जीवन यात्रा संतोष प्रद बनी रहेंगी।

लिवर कैंसर और लिवर सिरोसिस के खतरे को 40 प्रतिशत कम कर देती है ये काली चीज, डॉक्टर देते हैं पीने की सलाह

नई दिल्ली, एजेंसी। लिवर की सेहत को अच्छा रखना है तो कुछ चीजों को आसपास भी नहीं भटकने देना चाहिए। भले ही लिवर के अंदर खुद को ठीक करने की क्षमता होती है और वो अपनी डैमेज सेल्स को आसानी से ठीक कर लेता हो, लेकिन क्रोनिक लिवर इंजरी आसानी से ठीक नहीं होती है। ये धीरे धीरे लिवर की क्षमता को प्रभावित करने लगती है। इसलिए लिवर के मरीज को डॉक्टर ब्लैक कॉफी पीने की सलाह देते हैं। रोजाना ब्लैक कॉफी पीने से लिवर कैंसर और लिवर सिरोसिस का खतरा 40 प्रतिशत कम हो जाता है। जानिए लिवर को कैसे मजबूत बनाएं।

लिवर के लिए ब्लैक कॉफी

कॉफी सिर्फ स्वाद या नींद भगाने के लिए ही नहीं है बल्कि लिवर के लिए दवा का काम करती है। रोजाना 3 कप कॉफी पीने से लिवर सिरोसिस का खतरा और लिवर कैंसर का खतरा 40 प्रतिशत तक कम हो जाता है। कॉफी में पाए जाने वाले एंटीऑक्सीडेंट्स लिवर को नया जीवन देने में मदद करते हैं। हालांकि इन फायदों के लिए आपको बिना दूध, क्रीम और बिना चीनी वाली कॉफी पीनी होगी। जी हां सिर्फ ब्लैक कॉफी पीने से ये फायदे मिलेंगे।

नॉन अल्कोहलिक फैटी लिवर कितना खतरनाक

नॉन अल्कोहलिक फैटी लिवर को ज्यादा खतरनाक माना जाता है। क्योंकि लंबे समय तक इसके लक्षण नजर नहीं आते हैं। ये लिवर को साइलेंट डैमेज पहंचाता है। ऐसा नहीं है सिर्फ ड्रिंक करने वालों को ही फैटी लिवर होता है। जो लोग शराब से दूर रहते हैं उन्हें भी फैटी लिवर होता है। इन दिनों हर 3 में से 1 को फैटी लिवर की समस्या है।

लिवर खराब कैसे होता है?

आप जो भी खाते हैं उसे प्रोसेस करने का काम लिवर करता है। बिना डॉक्टर की सलाह के दर्द की दवाएं खाने से लिवर को खतरनाक नुकसान हो सकता है। वहीं लंबे समय कर किसी खास ड्रग यानि दवा का सेवन करने से भी लिवर डैमेज हो सकता है। इसलिए दवाएं हमेशा डॉक्टर की सलाह के बाद ही खाएं। सिर्फ खाना ही नहीं नींद भी सीधे तौर पर लिवर को प्रभावित करती है। खराब नींद लिवर की सेहत पर असर डाल सकती है। इससे मेटाबॉलिज्म और लिवर का टॉक्सिन्स क्लियरेंस फंक्शन प्रभावित होता है। इसलिए आपको 8-9 घंटे की अच्छी नींद जरूर लेनी चाहिए। आपके लिवर की अपनी एक खुद की घड़ी होती है। सर्केडियन रिदम मैटर करती है। अगर आप रात में देर से खाना खाते हैं। तो इससे लिवर पर स्ट्रेस पड़ता है और लिवर का टॉक्सिन साइकल प्रभावित होता है। जिससे शरीर में फैट जमा होने लगता है।

मिनटों में बनाएं भल्ला पापड़ी रेसिपी, मूंगदाल से तैयार करें मुलायम वड़ा, ऐसे बनाकर खाएं पसंदीदा चाट

चाट बनाना झंझट और थोड़ी मेहनत का काम है ये सोचकर ज्यादातर लोग बाहर की बनी चाट खाना पसंद करते हैं, लेकिन मानसून में बाहर का कुछ भी खाने से आपको बचना चाहिए। इसलिए आज हम आपको बताएंगे एक ऐसी चाट की रेसिपी जिसमें सिर्फ 30-40 मिनट में दो शानदार चाट तैयार हो जाएंगी। बारिश के मौसम में घर बैठकर की ताजा और हेल्दी चाट का मजा उठाना है तो नोट करें ये रेसिपी। मीठी चटनी की रेसिपी- दो बड़े चम्मच अमचूर पाउडर में एक गिलास पानी डालें। उबाल आने पर इसमें एक चम्मच ड्राई अदरक जिसे सौंठ पाउडर कहते हैं वो मिक्स करें। इसके बाद चार बड़े चम्मच चीनी या शक्कर या गुड़ भी डाल सकते हैं। साथ ही थोड़ी लाल मिर्च, छोटा चम्मच नमक, 1 छोटा चम्मच भुना जीरा पाउडर और थोड़ी सी काली मिर्च का पाउडर डालें। मीठी चटनी जितना गाड़ा होने पर मिक्सचर को उबालें और मीठी चटनी या कहिए सौंठ तैयार है। हरी चटनी की रेसिपी- हरे धनिये में कुछ पत्ते पुदाने के डालें साथ ही थोड़ा सा अदरक, जीरा, एक चम्मच दही और 1 बड़ा चम्मच भुनी चने की दाल डालें। दाल ना हो दो चम्मच भुने चने या एक छोटा चम्मच बेसन या सत्तू भी डाल सकते हैं। स्वादानुसार नमक और मिर्च डालें और 2-3 आइस क्यूब डालकर हरी चटनी तैयार करें। इससे चटनी का हरा रंग बना रहता है। भल्ला की रेसिपी- 2-3 घंटे के लिए एक कप मूंग दाल को भिगोएं और फिर मिक्सी में बिना पानी अच्छी तरह पीस लें। मूंग दाल बिना पानी के आसानी से पिस जाती है। इसको 5 मिनट तक अच्छी तरह फेंटे और जब दाल फूल जाए तो छोटे छोटे गोल गोल पकोड़े या बड़े जैसे तल लें।

दाल-सब्जी खाकर हो गए हैं बोर तो ट्राई करें सिंधी कढ़ी की रेसिपी, हर निवाले पर निकलेगा वाह, नोट कर लें विधि

नई दिल्ली, एजेंसी। सिंधी कढ़ी, लगभग हर सिंधी समुदाय में बनाई जाती है। किसी मेहमान के आने पर या शादी-ब्याह में यह जरूर बनती है। इस स्वादिष्ट कढ़ी को आप भी आसानी से घर पर बना सकते हैं। ढेर सारी सब्ज़ियों, बेसन, इमली का पानी और कुछ खास मसालों से बनी यह खुशबूदार कढ़ी, जिसमें बेसन को भूनकर उसकी तरी में सब्ज़ियों को पकाया जाता है, स्वाद का एक अनोखा अनुभव देती है। इस कढ़ी की खासियत यह भी है कि आप इसमें अपनी मनपसंद सब्ज़ियां मिला सकते हैं

सिंधी कढ़ी के लिए सामग्री

बेसनः 4 टेबल स्पून, 8-10 ग्वार की फली, 5-6 भिंडी, 1 ड्रमस्टिक, 8-10 टुकड़े फूलगोभी, 1-2 आलू, 1/3 कप हरी मटर, टमाटरः 1 (पेस्ट के लिए), 1/2 चम्मच मेथी दाना, 1/2 चम्मच राई, 3/4 चम्मच जीरा, चुटकी भर हींग, 1/2 चम्मच हल्दी पाउडर, 1/2 चम्मच लाल मिर्च पाउडर, 1/3 चम्मच गरम मसाला, इमली का पानीः आधा कटोरी, अदरक का पेस्टः 1 टेबल स्पून, 5-6, करी पत्ता, 3 स्प्लिट हरी मिर्च, बारीक कटी हरी धनिया, स्वाद के अनुसार नमक

कैसे बनाएं सिंधी कढ़ी?

सभी सब्ज़ियों को अच्छी तरह धोकर बड़े टुकड़ों में काट लें। इमली के पल्प को थोड़े से पानी में भिगोकर इमली का रस निकाल लें। सभी मसालों को एक जगह इकट्ठा कर लें। टमाटर को पीसकर पेस्ट बना लें। कटी हुई सारी सब्ज़ियों को डीप फ्राई करके अलग निकाल लें। कढ़ाई में ऑयल डालकर गरम करें। गरम तेल में मेथी दाना, राई, जीरा, हींग डालकर तड़का लगाएं। 12-15 सेकंड बाद करी पत्ता डालें। अब बेसन डालकर लगातार चलाते हुए मध्यम आंच पर भूनें। ध्यान रहे कि बेसन में गांठें (लम्स) न पड़ें। जब बेसन से अच्छी खुशबू आने लगे और उसका रंग थोड़ा बदल जाए, तब इसमें थोड़ा-थोड़ा गरम पानी डालते हुए मिक्स करें। अब करी में हल्दी पाउडर, बारीक कटा अदरक, लाल मिर्च पाउडर डालें और अच्छी तरह मिलाएं। जरूरत के अनुसार और पानी डालें।

कार्यपालन यंत्री लोक निर्माण विभाग मे पदस्थ कुंवर सिंह ठाकुर की नियुक्ति के दस्तावेज संदिग्ध आरटीआई में हुआ बड़ा खुलासा

जिम्मेदार अधिकारी कार्यवाही करने पर नाकाम साबित होते नजर आ रहे हैं कहीं गांधी जी के आगे तो नतमस्तक नहीं है

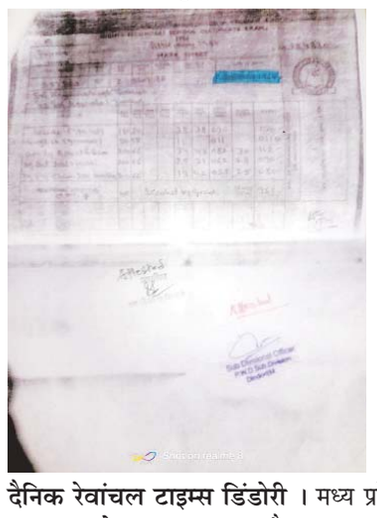

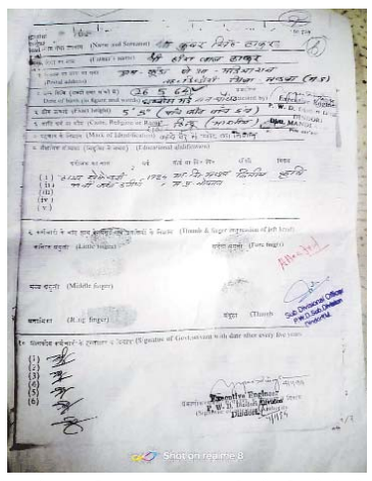

दैनिक रेवांचल टाइम्स डिंडोरी । मध्य प्रदेश के आदिवासी बाहुल्य जिले डिंडोरी में तरह-तरह के भ्रष्टाचार गबन और पद का दुरुपयोग करते हुए जम के फजीर्वाड़ा किया जा रहा है और जब शासन की और जनता के बीच पारदर्शिता के लिए एक अधिनियम बनाया गया है जो वह भी अफसरशाही ने अपना गुलाम बना लिया है और उसे अपने तरीके से पेश करते हैं जहां एक और सरकारे पारदर्शिता और ईमानदारी का दावा करती है वहीं दूसरी ओर डिंडोरी जिले के कार्यालय कार्यपालन यंत्री लोक निर्माण विभाग डिंडोरी में पदस्थ कुंवर सिंह ठाकुर पिता हीरालाल ठाकुर की संदिग्ध नियुक्ति ने इन दावों की पोल खोल कर रख दी कुंवर सिंह ठाकुर नामक व्यक्ति ने प्रथम नियुक्ति के समय कूटरचित दस्तावेजों का उपयोग और अन्य प्रमाण पत्र के सहारे सरकारी नौकरी हासिल की है और हैरानी की बात यहां है कि ना उनके पास जाति प्रमाण पत्र न मूल निवासी प्रमाण पत्र ना तो चरित्र प्रमाण पत्र जो यहां साबित करता है कि हिंदू भारतीय नागरिक कैसे इसके बावजूद भी पूरा सरकारी तंत्र इस घोटाले को दबाने में जुठा नजर आ रहा है वहीं दूसरी और अपने अफसर ने उसे बचाने हर संभव प्रयास कर रहे लगभग एक महीना बीतने को आ रहा है और विभाग को भी इस मामले में कई बार मौखिक रूप से सूचित किया जा चुका है।

इसके बावजूद भी अधिकारी जांच के नाम पर टालमटोल करते नजर आ रहे हैं नई धाराएं नए उपाय ढूंढ रहे हैं इस गंदगी को उजागर करने की कोशिश की आरटीआई कार्यकर्ता प्रमोद पड़वार उन्होंने सूचना के अधिकार के तहत कार्यालय कार्यपालन यंत्री लोक निर्माण विभाग डिंडोरी मैं पदस्थ कुंवर सिंह ठाकुर टाइम कीपर के द्वारा प्रथम नियुक्ति के समय विभाग के समक्ष प्रस्तुत अपने शैक्षणिक योग्यता एवं अन्य प्रमाण पत्र की जानकारी मांगी गई थी जो कि वह शासकीय दस्तावेजों की श्रेणी में आते हैं और वह नियम पूर्वक देने योग्य है और शासन के नियम और एक्ट के अंतर्गत वहां एक लोक सेवक के दस्तावेज है और और शासकीय कार्यालय में जमा उपरांत वह शासकीय दस्तावेजों की श्रेणी में आते हैं और वहां मांगे जाने पर देने योग्य है पर जानकारी ना प्रदाय करना इससे स्पष्ट होता है की मांग की गई जानकारी जब सार्वजनिक है लोकहित एवं पारदर्शिता को ध्यान में रखते हुए प्रदाय की जा सकती है तो कहीं ना कहीं वरिष्ठ अधिकारियों के द्वारा अधिनियम को मजाक और अपना गुलाम बनाते हुएआवेदक को भ्रामक जानकारी देने या भ्रामक पत्र जानकारी करना सूचना अधिकार अधिनियम की अवहेलना के अंतर्गत आता है जो की धारा 18 में शिकायत योग्य है जिसमें उन्होंने अधिनियम के तहत दंडित करने का प्रावधान भी बनाया गया है पर एक सीधी स्पष्ट और कानूनी मांग लेकिन जो जवाब मिला वहां सरकारी व्यवस्था की नियत को उजागर करने के लिए काफी था

कानून की आड़ में सच्चाई को दबाने की कोशिश, लोक सूचना अधिकारी ने धारा 8,1 और व्यक्ति का जानकारी का हवाला देकर जवाब देने से इनकार भी किया जाता है और यह भी कहा जाता है जानकारी हमारे पास उपलब्ध नहीं है कई बार तो लिखित लेटर में हैरान कर देने वाली बात तो यहां है कि आखिर विभाग से दस्तावेज जाएंगे कहां वही धारा जो जांच एजेंसियों के लिए बनाया गया है पर उस धारा को जिम्मेदार अधिकारी कर्मचारी उसे अब व्यक्तिगत जानकारी सुरक्षा के लिए और अब वहां फजीर्वाड़ा और भ्रष्टाचार छुपाने का औजार बन चुकी है जब आरटीआई कार्यकर्ता प्रमोद पड़वार सिविल लाइन निवासी डिंडोरी ने अधीक्षण यंत्री कार्यालय जबलपुर में प्रथम अपील दाखिल करने को कहा तो आनन-फानन मे प्रमोद पड़वार आरटीआई कार्यकर्ता को तुरंत आधी अधूरी जानकारी थमा दिया गया जिम्मेदारों को एक हफ्ते की भीतर दस्तावेज देने के लिए कहा गया जहां दस्तावेजों ने स्पष्ट कर दिया नियुक्ति फर्जी कूटरचित दस्तावेज के आधार पर हुई है जो जांच का विषय है लेकिन लोक निर्माण विभाग में पदस्थ कुंवर सिंह ठाकुर टाइम कीपर लगभग 27, 28 वर्षों से लगातार प्रशासन को चुना लग रहे हैं और हर महीने मोटी सैलेरी पा रहे हैं इसका क्या,क्या विभाग इन पर कार्यवाही करेगा अब तो यहां रिटायरमेंट की नजदीक में भी आ गए हैं इन्होंने प्रशासन को चूना लगाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है

अगर दस्तावेज असली है तो चुप्पी क्यों.. यह सवाल अब पूरे सिस्टम से पूछा जाना चाहिए अगर दस्तावेज सही है तो उन्हें देने में हिचक क्यों और अधिनियम की अवहेलना क्यों यदि फर्जी है तो अफसरशाही उन्हें बचाने में क्यों लगी है यहां मामला सिर्फ एक व्यक्ति की फर्जी नियुक्ति का नहीं है यहां पूरे सरकारी तंत्र के चरित्र का आईना है कार्यालय, कार्यपालन यंत्री डिंडोरी मैं पदस्थ कुंवर सिंह ठाकुर की फर्जी भर्ती प्रक्रिया किया गया था सवाल यहां है कि जाति प्रमाण पत्र ,मूल निवासी प्रमाण पत्र ,चरित्र प्रमाण पत्र के बिना सरकारी नौकरी कैसे हासिल की कार्यालय ने एक अपना अलग नियम कानून बना रखा है और देश में अधिनियम लागू हुए लगभग 20 वर्ष बीतने के बाद भी अधिनियम की जानकारी से विभाग की जिम्मेदार अनाविज्ञ है और भिन्न-भिन्न धाराओं और का हवाला देकर बचनेऔर बचाने की कोशिश करते आ रहे हैं आज एक आवेदन महज केवल अफसर शाही के हाथों तक सीमित रह गया है कार्यकर्ता को अपनी बात कहने के लिए जबलपुर कार्यालय, अधीक्षण यंत्री कार्यालय जाना पड़े तो समझ लेना चाहिए कि नीचे से लेकर ऊपर तक कुछ ना कुछ सड़ रहा है , क्या अभी न्याय रुकेगा या इस बार कोई उदाहरण बनेगा।

इनका कहना है

आपके द्वारा जो आरटीआई में जानकारी मांगा गया था आपको विभाग द्वारा दे दिया गया है अब वहां सही है या गलत इसके बारे में कुछ नहीं कह सकता कहकर फोन काट दिया गया।

एम एस धुर्वे कार्यपालन यंत्री लोक निर्माण विभाग डिंडोरी

तबादला आदेश हवा-हवाई, रतन शाह उईके पर किसी का जोर नहीं

15 वर्षों से सिवनी में जमे राजस्व निरीक्षक रतन शाह उईके पर न प्रशासन का जोर, न राजनीतिक दखल का असर।

स्थानांतरण आदेश के बावजूद नहीं हो सकी कार्यमुक्ति, सिवनी से कुरई हुआ तबादला फिर भी बने हुए हैं पद पर काबिज

दैनिक रेवांचल टाइम सिवनी। जिले में एक बार फिर से प्रशासनिक प्रणाली पर सवाल खड़े हो गए हैं, जहां राजस्व निरीक्षक रतन शाह उईके का 17 जून 2025 को सिवनी से कुरई स्थानांतरण आदेश जारी हुआ, लेकिन हफ्तों बाद भी वे अपने मूल पद पर डटे हुए हैं। यह पहला मौका नहीं है, जब उईके का तबादला हुआ हो और उसे अमल में नहीं लाया गया हो। 3 वर्ष पूर्व भी स्थानांतरण आदेश निर्गत हुआ था, लेकिन अधिकारियों की ह्यमिलीभगतह्न और ह्यराजनीतिक पकड़ह्न के चलते वे यथावत बने रहे। रतन शाह उईके पिछले 15 वर्षों से एक ही स्थान पर पदस्थ हैं, जो साफ तौर पर स्थानांतरण नीति और प्रशासनिक पारदर्शिता का मजाक उड़ाता है। क्षेत्र में लोग इन्हें 'अंगद के पैर' की संज्ञा दे रहे हैं, जिन्हें न सत्ता बदल सकी और न ही प्रशासनिक आदेश। प्रशासनिक सूत्रों की मानें तो कलेक्टर द्वारा स्थानांतरण सूची में इनका नाम शामिल किया गया था, लेकिन न तो संबंधित विभाग ने रिलीविंग आदेश जारी किया, न ही कोई स्पष्ट जवाब दिया जा रहा है कि आखिर उन्हें स्थानांतरित क्यों नहीं किया गया।

जनता के उठते सवाल:

1.क्या रतन शाह उईके पर कोई विशेष राजनीतिक या प्रशासनिक संरक्षण है?

2. यदि स्थानांतरण अमल में लाना ही नहीं था, तो उसे प्रसारित क्यों किया गया?

3.स्थानांतरण नीति का पालन न करना क्या कलेक्टर की कार्यप्रणाली पर सवाल नहीं उठाता?

इस मामले ने प्रशासनिक कार्यशैली, निष्पक्षता और राजनीतिक हस्तक्षेप पर गहरे प्रश्नचिन्ह खड़े कर दिए हैं। लोगों में यह चर्चा जोरों पर है कि क्या वाकई कुछ अधिकारी 'सबसे ऊपर' होते हैं ।

यदि प्रशासन ऐसे मामलों में गंभीर नहीं हुआ, तो यह उदाहरण अन्य अधिकारियों के लिए भी अनुचित स्थायित्व का आधार बन सकता है, जिससे भ्रष्टाचार और जनहित की उपेक्षा को बल मिलेगा ।।

बालिका से दुष्कर्म के आरोपी को 20 वर्ष का सश्रम कारावास

दैनिक रेवांचल टाईम्स, कटनी। विशेष न्यायाधीश (पॉक्सो एक्ट) कटनी ने बालिका से दुष्कर्म के आरोपी को 20 वर्ष के कठोर कारावास एवं अर्थदंड से दंडित किया है। प्रकरण में पैरवीसहायक जिला अभियोजन अधिकारी/विशेष लोक अभियोजकश्री आशुतोष द्विवेदी द्वारा की गई। मीडिया सेल प्रभारी सुरेन्द्र कुमार गर्ग ने बताया कि अभियोक्त्री के माता-पिता दिनांक 17.06.2024 को उसकी नानी के यहां गये थे, घर पर अभियोक्त्री और उसका बडा भाई थे। अभियोक्त्री खाना खाकर अपने घर की परछी में सो रही थी तथा उसका भाई बाडी तरफ सो रहा था। अभियोक्त्री अ के मोहल्ले में रहने वाला आरोपी गेंदलाल चौधरी, जो कि अभियोक्त्री पर कुछ दिनों से बुरी नियत रखता था, जो रात करीब 11:00 बजे उसके घर के अंदर घुसकर अभियोक्त्री को पकड लिया, तब वह जोर से चिल्लाई तो उसका मुंह दबा लिया और उसे खटिया में पटकर उसके साथ जबरदस्ती गलत काम किया, तब अभियोक्त्राी चिल्लाई तो उसके बडे पापा की लडकी आई तो उसे देखकर आरोपी गेंदलाल चौधरी भागने लगा और भागते-भागते यह बात किसी को बताने पर जान से खत्मे करने की धमकी दी। फिर अभियोक्त्री ने घटना की सारी बात फोन करके अपने भाई, मां और पिता को बताई थी। दिनांक 18.06.2024 को अभियोक्त्री ने आरक्षी केन्द्र महिला थाना कटनी में सूचना देकर रिपोर्ट पंजीबद्ध कर प्रकरण विवेचना में लिया गया। विवेचना में संकलित साक्ष्य के आधार पर अभियोग पत्र न्यायालय में प्रस्तुत किया गया। तदुपरांत अभियोजन के साक्ष्य, तर्कोंएवं वैज्ञानिक साक्ष्य से सहमत होते हुए विशेष न्यायालय (पॉक्सो एक्ट) जिला कटनी द्वारा आरोपी गेंदालाल चौधरी को धारा 376(3) भादवि एवं 3 सहपठित धारा 4(2) पॉक्सो् एक्ट् में 20 वर्ष का सश्रम कारावास एवं 3000/- रू. का अर्थदण्ड(तथा धारा 450 भादवि में 10 वर्ष का सश्रम कारावास एवं 1,000/-रुपए के अर्थदण्डर की सजा सुनाई गई।

मुख्यमंत्री के मुख्य आतिथ्य में होगा पीएम आवास के स्वीकृत पत्रों का वितरण

कटनी। मध्यप्रदेश ग्रोथ कॉन्क्लेव का आयोजन मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के मुख्य आतिथ्य में शहरी विकास के क्षेत्र से जुड़े अग्रणी उद्यमियों, विषय विशेषज्ञों एवं माननीय जनप्रतिनिधियों की गरिमामयी उपस्थिति में शुक्रवार 11 जुलाई 2025 को इन्दौर स्थित ब्रिलिएंट कन्वेंशन सेंटर में किया जाना है। कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) 1.0 अन्तर्गत निर्मित आवासों का गृह प्रवेश व प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) 2.0 अन्तर्गत नवीन आवासों के पात्र हितग्राहियों को स्वीकृति पत्र प्रदान किए जाएंगे। उपायुक्त श्री शैलेश गुप्ता नें स्थानीय स्तर पर जनप्रतिनिधियों एवं हितग्राहियों की मौजूदगी में कार्यक्रम का वर्चुअली प्रसारण मेयर इन काउंसिल सभागार में दोपहर 2 बजे से आयोजित करने हेतु संपूर्ण कार्य व्यवस्थाओं का प्रभारी सुधीर मिश्रा कार्यपालन यंत्री तथा नोडल अधिकारी अनिल जायसवाल को नियुक्त करते हुए समस्त आवश्यक व्यवस्थाओं हेतु विभागीय अधिकारियों कर्मचारियों को दायित्वों का आबंटन किया है। इस संबंध में उपायुक्त श्री गुप्ता द्वारा एक आदेश जारी करते हुए कार्यालय अधीक्षक श्री नागेंद्र पटेल को आयोजित कार्यक्रम के दौरान जनप्रतिनिधियों को आमंत्रित करने, मुख्य स्टोर्स शाखा को एल ई डी, इंटरनेट, बैनर, बैकड्राप, स्वल्पाहार, फूल माला, बुके, पेयजल की व्यवस्था पूर्ण कराने के निर्देश दिए है। जबकि मंच एवं बैठक व्यवस्था मंच संचालन, कार्यक्रम का व्यापक प्रचार प्रसार करने, पार्किंग आदि की व्यवस्था, बैकर्स एवं असाशकीय संगठनों के प्रतिनिधियों को आमंत्रित करनें हेतु विभागीय अधिकारियों को दायित्व सौपे है। इसके साथ ही प्रभारी कार्यपालन यंत्री, सहायक यंत्री,उपयंत्री एवं प्रधानमंत्री आवास योजना के समस्त स्टाफ को नगर के प्रधान मंत्री आवास योजना 1.0 एवं 2.0 के हितग्राहियों को आमंत्रित करने की कार्यवाही हेतु निर्देशित किया है।

जिले में अब तक 439.1 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज

कटनी। जिले में इस वर्ष रविवार 1 जून से गुरूवार 10 जुलाई तक कुल 439.1 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज की गई है। जिले में सर्वाधिक औसत वर्षा इस साल स्लीमनाबाद तहसील में दर्ज की गई है, जहां अब तक 616.6 मिलीमीटर वर्षा हुई है। जिले में इसी अवधि में बीते वर्ष कुल 133.1 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज की गई थी। इस प्रकार इस साल अब तक पिछले वर्ष की तुलना में 229.9 प्रतिशत अधिक औसत वर्षा हो चुकी है। अधीक्षक भू-अभिलेख हर्षवर्धन रामटेके ने बताया कि जिले में आलोच्य अवधि तक कटनी तहसील में 409.6 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज की गई है। जबकि तहसील रीठी में 534.2 मिलीमीटर, बड़वारा तहसील में 372 मिलीमीटर, बरही तहसील में 304 मिलीमीटर और विजयराघवगढ़ तहसील में 407.4 मिलीमीटर, बहोरीबंद तहसील में कुल 453.8 मिलीमीटर एवं स्लीमनाबाद तहसील में 616.6 मिलीमीटर तथा ढीमरखेड़ा तहसील में 413.2 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज की गई है।

31 जुलाई तक फसलों का बीमा करा सकते हैं किसान

कटनी। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत खरीफ 2025 के लिए सभी कृषक संबंधित पटवारी हल्के में अधिसूचित फसलों के लिए बीमा करवा सकते हैं। फसल बीमा कराने की अंतिम तिथि 31 जुलाई निर्धारित की गई है। उप संचालक किसान कल्याण तथा कृषि विकास श्री मनीष मिश्रा ने बताया कि ऋणी कृषकों ने जिस बैंक से फसल ऋण लिया है, वे उस बैंक में अपना बीमा करवा सकते हैं। वहीं अऋणी कृषक किसान क्रेडिट कार्ड पर फसल ऋण प्रदायकर्ता बैंकों, सहकारी समितियों, किसान बैंक, जन सेवा केन्द्र (सीएससी) तथा ग्राम पंचायत स्तर पर जन सेवा केन्द्र के माध्यम से 31 जुलाई तक अपनी फसलों का बीमा करा सकते हैं। बीमा कराने के लिए कृषकों को घोषणा पत्र, आधार कार्ड, जमीन सिकमी होने पर इसका शपथ पत्र, ऋण पुस्तिका, बैंक खाते का विवरण, बुवाई प्रमाण पत्र लेकर जाना होगा। खरीफ में अनाज एवं दलहन फसल के लिए प्रीमियम राशि बीमित राशि का 2 प्रतिशत है। श्री मिश्रा ने सभी कृषकों से आग्रह किया है कि वह अपनी अधिसूचित फसलों का बीमा अवश्य करवायें। ताकि असामान्य परिस्थितियों में होने वाले नुकसान की प्रतिपूर्ति हो सके।

गुरुपूर्णिमा पर भाजपा नेताओं ने की गुरुवंदना

दैनिक रेवांचल टाईम्स, कटनी। भारतीय जनता पार्टी ने आज मंडल स्तर पर विविध क्षेत्रों में शिष्यों को पारंगत कर रहे गुरुजनों की वंदना की उनका सम्मान किया। जिला मीडिया प्रभारी आशुतोष शुक्ला ने बताया कि पूरे जिले में करीब 100 से अधिक ऐसे श्रेष्ठ गुरुजनों जो अलग अलग विधाओं में अपने शिष्यों को शिक्षित या प्रशिक्षित कर रहे हैं उनका गुरु स्थान में पहुंचकर पूजन सम्मान किया गया। इस अवसर पर भाजपा जिलाध्यक्ष दीपक टण्डन सोनी ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री मोहन यादव, प्रदेशाध्यक्ष श्री हेमंत खंडेलवाल, सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा, जिला प्रभारी श्री संजय साहू के मार्गदर्शन ने कटनी जिले में भाजपजनों द्वारा आज गुरुपूर्णिमा पर व्रहद रूप से यह कार्यक्रम आयोजित किया गया था। श्री टण्डन ने कहा कि भाजपा ही एक मात्र ऐसा राजनीतिक संगठन है जो अपनी संस्कृति सभ्यता के अनुरूप निरन्तर सामाजिक धार्मिक सांस्कृतिक गतिविधियों में भागीदार बनती है। कार्यक्रम संयोजक मृदुल द्विवेदी रामू साहू ने बताया कि गुरुजनों की पूजन सम्मान के इस कार्यक्रम के तहत जिलाध्यक्ष दीपक सोनी टण्डन ने हनुमत कुटी आश्रम में श्री सुरेंद्र दास जी महाराज, जैन मंदिर में श्री पदम सागर जी महाराज, गायत्री नगर में आचार्य भूपनारायण मिश्रा, सुक्खन अखाड़ा में, विधायक श्री संजय सत्येंद्र पाठक ने दद्दा धाम में बहोरीबंद विधायक प्रणय पांडेय ने भरभरा आश्रम में संत बनवारी दास जी, लोढ़ा पहाड़ , भेड़ा आश्रम, बड़वारा विधायक श्री धीरेंद्र सिंह ने भरभरा आश्रम में संत बनवारी दास जी, प्रदेश कार्यसमिति सदस्य श्री रामरतन पायल ने रैपुरा में डॉ रजनीश शास्त्री ने पूजन किया।

जलभराव की प्राप्त शिकायतों का शीघ्र किया गया निराकरण

गुरुवार दोपहर हुई अचानक अतिवृष्टि के दौरान नगर निगम कार्यालय में स्थापित कंट्रोल में जलभराव की प्राप्त शिकायतों को गंभीरता से लेते हुए संबंधित क्षेत्रीय दल के माध्यम से शीघ्र जल निकासी के प्रयास किये गए। इस संबंध में स्वास्थ्य अधिकारी संजय सोनी नें बताया कि अतिवर्षा के दौरान शंभू टॉकीज मार्ग में श्री अभिषेक राय के मकान के पीछे तथा डॉ मंगतराम हास्पिटल के पीछे स्थित नाली में पन्नी एवं कचरा आदि के जमाव के कारण जलभराव की समस्या उत्पन्न हुई थी। शिकायत प्राप्त होने पर तत्काल ही क्षेत्रीय दरोगा के माध्यम से शिकायत का निराकरण कराया गया। इसी प्रकार आयकर कार्यालय कंपाउंड में तथा पंडित दीनदयाल उपाध्याय वार्ड अंतर्गत दुर्गा चैक तथा गोल बाजार सिंधी गुरुद्वारा के पास में वर्षा जलभराव की शिकायत प्राप्त होने पर क्षेत्रीय दरोगा के माध्यम से चोक नालियों की सफाई कराई जाकर जल निकासी कराई गई।

गुरु पूर्णिमा: गुरु चरणों के दर्शन करने लगी रही भक्तों की दिनभर कतारें

दैनिक रेवांचल टाईम्स, कटनी। जैसा कि प्रत्येक वर्ष आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा मनाई जाती है गुरु पूर्णिमा वो दिन है जिस दिन वेदव्यास जी का जन्म भी हुआ था इसलिए इसे व्यास पूर्णिमा भी कहते है इस दिन शिष्य मंडल अपने गुरु के चरणों का दर्शन करने गुरु के आश्रम पहुंचते है जिले के स्लीमनाबाद समीपस्थ संत निकुंज कृष्ण कृपा धाम भेड़ा में विगत दिवस पूरे दिन गुरु चरणों के दर्शन करने भक्तों का जमावड़ा लगा रहा भक्तों ने गुरु के चरण पखार उन्हें फूल माला पहना उनका शुभ आशीर्वाद प्राप्त किया, आपको बता दे कि कृष्ण कृपा धाम के श्याम गिरी जी महराज एवं बाल ब्रह्मचारी संत शिरोमणि ब्रम्हानंद दास जी महराज के सानिध्य में कार्यक्रम का विशाल आयोजन किया गया भक्तों ने गुरु चरणों की बंदना कर प्रसाद ग्रहण किया प्रसाद प्राप्त करने के बाद भक्तों ने चल रही भजन संध्या का लुत्फ उठाया, कार्यक्रम समिति के सदस्य लक्ष्मण मिश्रा प्रमोद विश्वकर्मा यश त्रिपाठी दीपक मिश्रा मनोज मिश्रा सौरभ मिश्रा रजनीश पांडे जगदीश मिश्रा मनीष मिश्रा अमित मिश्रा पुरुषोत्तम झरिया गुड्डा नागनाथ धर्मराज ठाकुर ने आए भक्त श्रद्धालु जन का स्वागत वंदन किया कार्यक्रम के इस दौरान बहोरीबंद विधानसभा के विधायक प्रणय प्रभात पांडे एस डी एम बहोरीबंद तहसीलदार स्लीमनाबाद थाना प्रभारी सहित पुलिस बल विहिप बजरंग दल के जिला पदाधिकारियों सहित हजारों की संख्या में भक्त श्रद्धालु जन मौजूद रहे।

विधायक ने गुरुजनों से लिया आशीर्वाद

दैनिक रेवांचल टाइम्स सिवनी। सिवनी विधानसभा क्षेत्र के विधायक दिनेश राय मुनमुन ने गुरुजनों से आशीर्वाद प्राप्त किया। आज गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर विधायक दिनेश राय मुनमुन ने अपनी 105 वर्षीय दादी मां से आशीर्वाद प्राप्त किया।

इसके पश्चात अपने स्कूल समय के शिक्षक एवं मार्गदर्शक डी.एल. नामदेव के निवास पहुंचकर आशीर्वाद प्राप्त किया तथा स्वास्थ्य संबंधी जानकारी लिया तथा शीघ्र स्वस्थ होने की कामना किया। इसके पश्चात विधायक ग्राम पिठैरा लखनादौन स्थित आश्रम पहुंचे जहां पर आपने अनंत विभूषित धर्म पीठाधीश्वर जगत गुरु शंकराचार्य स्वामी नारायणानंद तीर्थ जी महाराज के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। इसके पश्चात आप गुरुरत्नेश्वर धाम दिघौरी पहुंचे। जहां पर ब्रम्हलीन जगतगुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती महाराज के श्री चरणों मे पुष्प अर्पित कर नमन किया। सिवनी नगर के बरघाट रोड पहुंचकर संत शिरोमणि गुरु रविदास जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर नमन किया। तदोपरांत राय ने पंडित जानकी वल्लभ मिश्र के छिंदवाड़ा रोड अंबिका कालोनी स्थित निवास पहुंचकर शाल, श्रीफल से सम्मानित किया तथा चरण स्पर्श कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

क्या आप दाद-खाज़, खुजली से परेशान है?
अब आपके शहर सिवनी में सभी प्रकार के चर्म रोगों का उपचार सुप्रसिद्ध चिकित्सक द्वारा संभव
डॉ. हेमलता चांचरिया
BHMS, PGDCC, Cosmetologist
चर्म, केश, सौन्दर्य चिकित्सक
माह के दूसरे एवं चौथे बुधवार
सुबह 11 बजे से 2 बजे तक
दाद (दराद) खाज खुजली का ईलाज
कील मुहाँसे का सफलतम ईलाज
चेहरे का साँवलापन झाई एवं Chemical Peeling दाग धब्बे हटाये द्वारा
तील एवं मस्सो का स्थाई ईलाज लेजर द्वारा
चेहरे के अनचाहे बालों को हटाना बालों का झड़ना समय से पहले बाल सफेद होना गंजेपन का ईलाज (पी.आर.पी.) द्वारा
सफेद दाग का सफल ईलाज दवाई एवं सर्जरी द्वारा।
काली झाईयाँ, चेहरे के दाग धब्बे एवं गड्ढों का सफलतम ईलाज।
एलर्जी, एग्जिमा, शरीर पर खुजली एवं सोरायसिस का सफल इलाज
चेहरे के गड्ढे झुरियां एवं दाग का सफल ईलाज दवाई एवं Dermaroller द्वारा
रेवा फार्मेसी
पता: बरघट रोड़, गणेश चौक, सिवनी
Mob: 96696 52061, 88393 10065

चालानी कार्रवाई के खिलाफ मोर्चा, यात्रियों को भारी परेशानी, जिलेभर में बस सेवाएं ठप

छिंदवाड़ा में बस ऑपरेटरों की बेमियादी हड़ताल

दैनिक रेवांचल टाइम्स छिंदवाड़ा। छिंदवाड़ा जिले में बस ऑपरेटरों ने पुलिस प्रशासन द्वारा की जा रही निरंतर चालानी कार्रवाई के विरोध में अनिश्चितकालीन हड़ताल का ऐलान कर दिया है। गुरुवार से जिले के सभी मार्गों पर चलने वाली प्राइवेट बसें पूरी तरह से बंद हो गई हैं। इस हड़ताल का सीधा असर आम जनता और यात्रियों पर पड़ा है, जिन्हें अब अपने गंतव्य तक पहुंचने के लिए भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

क्या है मामला?

बस एसोसिएशन छिंदवाड़ा के अनुसार, ट्रैफिक पुलिस द्वारा लगातार बसों पर चालानी कार्रवाई की जा रही है, जिससे बस ऑपरेटरों को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ रहा है। एसोसिएशन का कहना है कि प्रशासन बिना पूर्व सूचना और स्पष्ट निर्देशों के चालान काट रहा है, जिससे हालात और बिगड़ते जा रहे हैं।

बस ऑपरेटरों की मांगें:

ट्रैफिक पुलिस द्वारा की जा रही अव्यवस्थित चालानी कार्रवाई पर रोक लगाई जाए

नियमों को स्पष्ट किया जाए और पहले से जानकारी दी जाए

परिवहन विभाग व प्रशासन के साथ बैठक कर समाधान निकाला जाए

यात्रियों की परेशानी बढ़ी

हड़ताल के कारण स्कूली छात्र, नौकरीपेशा लोग और ग्रामीण क्षेत्रों से आने-जाने वाले नागरिक बुरी तरह प्रभावित हुए हैं। सड़कों पर सामान्य दिनों की तुलना में यात्री बसें नदारद दिखीं, जिससे निजी वाहनों और ऑटो रिक्शा पर भी दबाव बढ़ गया है।

प्रशासन की प्रतिक्रिया का इंतजार

अब सबकी निगाहें जिला प्रशासन और परिवहन विभाग पर हैं कि वे इस स्थिति को किस तरह से संभालते हैं और क्या कोई संवाद स्थापित कर हड़ताल समाप्त करवाते हैं।

स्मार्ट मीटर से बिजली की खपत को नियंत्रित करना आसान

भोपाल। स्मार्ट मीटर उपभोक्ताओं को नए टैरिफ आर्डर के अनुसार अब खपत के आधार पर दिन के टैरिफ में सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक उपयोग की गई बिजली पर 20 प्रतिशत की छूट मिल रही है ।स्मार्ट मीटर उपभोक्ताओं के लिए यह सभी छूट अथवा प्रोत्साहन की गणना सरकारी सब्सिडी (यदि कोई हो) को छोड़कर की जा रही है। यह उपभोक्ता श्रेणियों के लिए विशिष्ट नियमों और शर्तों के आधार पर दिन के विभिन्न समय के दौरान खपत की अवधि के अनुसार ऊर्जा शुल्क पर लागू होगी। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के महाप्रबंधक (स्मार्ट मीटरिंग सेल) श्री सी.के.पवार ने स्मार्ट मीटर से होने वाले लाभ तथा मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा उपभोक्ता हित में चलाई जा रही शासन की योजनाओं जैसे ग्रामीण क्षेत्र में 5 रुपये में नवीन कनेक्शन, सोलर रूफटॉप आदि को आम लोगों तक पहुंचाने के उद्देश्य से गुरूवार को गुना में आयोजित मीडिया कार्यशाला में यह जानकारी दी।

परिसर में रीडिंग लेने आने की आवश्यकता नहीं

मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के महाप्रबंधक (स्मार्ट मीटरिंग सेल) श्री सी.के. पवार ने मीडिया से चर्चा करते हुये बताया कि शहर के लोगों में स्मार्ट मीटर को लेकर जो भ्रांतियां हैं, उन्हें दूर करना जरूरी है। उन्होंने बताया कि विद्युत स्मार्ट मीटर लगने के बाद परिसर में रीडिंग लेने आने की जरूरत नहीं होती है ऑटोमेटिक सटीक रीडिंग होती है। मानवीय हस्तक्षेप नहीं होने से गड़बड़ी की कोई गुंजाइश नहीं होती है। उपभोक्ता अपनी प्रतिदिन की विद्युत खपत स्मार्ट मीटर के माध्यम से देख सकता है। उन्होंने बताया कि दैनिक के साथ झसाथ सप्ताहिक अथवा मासिक खपत आसानी से देखी जा सकती है, और बिजली की कितनी खपत हो रही है, अगले महीने उसका कितना बिल आ सकता है, उसका पूवार्नुमान भी आसानी से लगाया जा सकता है।

सांदीपनि विद्यालय विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के केन्द्र बनकर उभरे : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

गुणवत्तापूर्ण एवं रोजगार परक शिक्षा ही देश की मजबूती का आधार

शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम के लिए महू, देवास, नरसिंहपुर के स्कूलों को 5-5 लाख का पुरस्कार

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि गुणवत्तापूर्ण और रोजगार परक शिक्षा ही किसी देश की मजबूती का आधार है। बेहतर शिक्षा के बूते ही भारत आज दुनिया का सबसे बड़ा गणतंत्र बनकर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। हमारी वसुधैव कुटुबंकम की भावना से ऋषि-मुनियों के काल में भारतीय ज्ञान से दुनिया के कई देश प्रकाशमान हुए थे। वर्तमान समय में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में भारत का स्वर्णिम काल चल रहा है। मध्यप्रदेश सरकार बच्चों के सुनहरे भविष्य के लिए उन्हें उच्च गुणवत्ता युक्त शिक्षा और सभी सुविधाएं प्रदान करने के लिए संकल्पित है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेश के सभी शिक्षकों एवं छात्रों को गुरु पूर्णिमा महोत्सव की शुभकामानाएं देते हुए कहा कि प्रदेश में 369 सांदीपनि विद्यालय संचालित हो रहे हैं। जहां शिक्षा केवल किताबों तक सीमित नहीं है, स्कूल विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के केंद्र बनकर उभरे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम के लिए महू, देवास, नरसिंहपुर के विद्यालयों को बेहतर शैक्षणिक प्रबंधन विकास के लिए 5-5 लाख रुपए देने की घोषणा की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि विश्वविद्यालयों के कुलपतियों को कुलगुरु की संज्ञा दी गई है, क्योंकि गुरु ही हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाते हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव गुरुवार को शासकीय कमला नेहरू सांदीपनि विद्यालय में आयोजित गुरु पूर्णिमा महोत्सव को संबोधित कर रहे थे।

प्रतीक स्वरूप 50 विद्यार्थियों को साइकिल वितरित

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने समग्र शिक्षा अभियान के अंतर्गत स्कूली बच्चों को निःशुल्क साइकिल वितरण के 2 दिवसीय अभियान का शुभारंभ करते हुए 50 विद्यार्थियों को निःशुल्क साइकिलें वितरित कीं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव का विद्यार्थियों ने एक धुन में साइकिल की घंटी बजाकर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की और मुख्यमंत्री डॉ. यादव का अभिवादन किया। अभियान के पहले दिन विभिन्न जिलों में विद्यार्थियों को 4 लाख 30 हजार साइकिलें बांटी गईं। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने गुरु पूर्णिमा के राज्य स्तरीय कार्यक्रम में गुरुजनों को सम्मानित भी किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने गुरु पूर्णिमा के अवसर पर उल्लेखनीय उपलब्धियों के लिए शिक्षक श्री मनोज सोहनी, श्री देवेंद्र बंसल, डॉ. एस.के. पाल, श्री मनोज कौशल, श्री सुरीत दास बनोथे, श्रीमती शुभांगी नामड़े, श्रीमती सारिका शर्मा, श्रीमती वंदना रामचंदानी, श्री योगेश विश्नोई और श्रीमती बख्तौर खान को अंगवस्त्र एवं श्रीफल भेंटकर सम्मानित किया। इस अवसर पर सांदीपनि विद्यालय पर केंद्रित लघु फिल्म का प्रदर्शन भी किया।

प्रधानमंत्री को 27 देशों का सर्वोच्च सम्मान मिलना देशवासियों को करता है गौरवान्वित- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पिछले दिनों प्रधानमंत्री श्री मोदी को नामीबिया, ब्राजील, त्रिनिदाद और टोबैगो तथा घाना के

राष्ट्राध्यक्षों द्वारा अपने देश का प्रतिष्ठित नागरिक सम्मान दिए जाने पर बधाई दी। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी दुनिया में भारत का गौरव बढ़ा रहे हैं। भारत हर क्षेत्र में विकास करते हुए आगे बढ़ रहा है। प्रधानमंत्री को 27 देशों का सर्वोच्च नागरिक सम्मान मिलना 140 करोड़ देशवासियों को गौरवान्वित करता है।

झाबुआ और रतलाम सांदीपनि विद्यालय को अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि विरासत के साथ विकास की भावना से प्रदेश के सर्व सुविधायुक्त विद्यालय अब महर्षि सांदीपनि के नाम से पहचान बना रहे हैं। इन विद्यालयों में बच्चों के आवागमन के लिए शासकीय बस सुविधा भी उपलब्ध कराई जा रही है। दूसरी ओर, पात्र स्कूली बच्चों को विद्यालय आने-जाने के लिए राज्य सरकार साइकिलें बांट रही है। ये साइकिलें हमारी आत्मनिर्भरता का प्रतीक हैं। इनसे हमारा स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है। सरकार अगले सत्र में बच्चों को यूनिफॉर्म तैयार करवा कर बांटेगी। साथ ही अगले वर्ष 75 प्रतिशत तक अंक लाने वाले प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को लगभग 1 लाख लैपटॉप बांटे जाएंगे। प्रदेश सरकार मेधावी विद्यार्थियों को इलेक्ट्रिक स्कूटी भी वितरित करेगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि इस वर्ष झाबुआ और रतलाम सांदीपनि विद्यालय को अंतरराष्ट्रीय स्तर का पुरस्कार मिला। दसवीं और 12वीं बोर्ड परीक्षाओं में सरकारी स्कूलों के विद्यार्थियों ने प्राइवेट स्कूलों को पीछे छोड़ दिया।-

उज्जैन में प्रारंभ होगा आईआईटी का सेटैलाइट सेंटर

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि स्कूलों के उन्नयन के साथ प्रदेश के 55 पीएम एक्सीलेंस कॉलेजों में भी नई शिक्षा नीति लागू की गई है, जहां विद्यार्थियों को रोजगारपरक शिक्षा प्रदान की जा रही है। इसी उद्देश्य से उज्जैन में आईआईटी का सेटैलाइट सेंटर प्रारंभ किया जाएगा। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार में चिकित्सा शिक्षा और स्वास्थ्य विभाग का विलय कर मेडिकल एजुकेशन एवं हेल्थ सेक्टर में नवाचार किया है। सरकार छोटे शहरों में मेडिकल कॉलेज खोलने पर जोर दे रही है, जिसके फलस्वरूप प्रदेश में आगामी 2 वर्ष के अंदर एमबीबीएस की सीटें 10 हजार हो जाएंगी। मध्यप्रदेश इकलौता ऐसा राज्य है, जहां नीट पास करने के बाद सरकार मेडिकल एजुकेशन के लिए विद्यार्थियों को भरपूर सहयोग कर रही है। उन्होंने कहा कि पढ़ाई पूरी करने के बाद विद्यार्थी केवल नौकरी करने वाले नहीं, नौकरी देने वाले भी बनें। डॉक्टर बनकर छोटे शहरों में अस्पताल खोलें, राज्य सरकार इसके लिए भी 40 प्रतिशत अनुदान प्रदान कर रही है। सरकार युवाओं के स्वावलंबन के लिए हरसंभव प्रयास कर रही है।

1.27 करोड़ लाड़ली बहनों को मिलेगा रक्षाबंधन का तोहफा- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सनातन संस्कृति में नारी को देवी के रूप में पूजा जाता है। भारतीय समाज में उनका अलग ही स्थान है। प्रदेश की 1.27 करोड़ लाड़ली बहनों को रक्षाबंधन के अवसर पर 1500 रुपए की राशि ट्रांसफर की जाएगी। प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में 2029 तक देश की बहनों को लोकसभा और विधानसभा में 33 प्रतिशत आरक्षण मिलेगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव को छात्रा संतोषी साहू ने हस्तनिर्मित पोर्ट्रेट भेंट किया- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने भोपाल के कमला नेहरू सांदीपनि कन्या विद्यालय के 36 करोड़ रुपये की लागत से तैयार नवनिर्मित भवन का लोकार्पण किया। शाला परिसर में आगमन पर विद्यार्थियों द्वारा बैंड की धुन पर मुख्यमंत्री डॉ. यादव का स्वागत किया गया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने दीप प्रज्ज्वलित कर तथा मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। कार्यक्रम में विद्यालय की छात्रा संतोषी साहू ने मुख्यमंत्री डॉ. यादव को हस्तनिर्मित पोर्ट्रेट भेंट कर उनका अभिवादन किया और कुमारी दीप्ति उईके ने गुरुवंदना की मनमोहक प्रस्तुत दी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव प्रदेश के बच्चों का साकार कर रहे हैं सपना : स्कूल शिक्षा मंत्री श्री सिंह

स्कूल शिक्षा एवं परिवहन मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह ने कहा कि गुरुपूर्णिमा हमारे लिए अपने गुरु के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने का दिन है। बच्चों के जीवन पर अपने शिक्षक का सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है। एक शिक्षक ही उन्हें काबिल बनाने का कार्य करता है। सभी बच्चों को गुरु और शिक्षकों के बताए मार्ग पर चलने का प्रयास करना चाहिए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने विरासत के साथ विकास को मूलमंत्र बनाया है। आज बच्चों का सपना साकार हो रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने अत्याधुनिक सांदिपनि विद्यालय की कल्पना की है। बच्चों को खुशी होगी कि उनके स्कूल का नाम महर्षि सांदीपनि आश्रम के नाम पर रखा गया है। नाम हमारे आचरण और परंपरा को इंगित करता है। नाम किसी के बारे में विचारधारा निर्माण का कार्य करता है।

स्कूल शिक्षा मंत्री श्री सिंह ने कहा कि सांदीपनि विद्यालयों में बच्चों को बेहतर शिक्षा प्रदान करने के लिए सभी सुविधाएं उपलब्ध हैं। नई शिक्षा नीति में रोजगारमूलक, बेहतर भविष्य निर्माण पर बल दिया गया है। आज से प्रदेश स्तर पर बच्चों को स्कूल आने-जाने के लिए साइकिल वितरण कार्य प्रारंभ हो रहा है। राज्य सरकार ने सत्र की शुरूआत से पहले किताबें और यूनिफॉर्म वितरित की है। विद्यार्थियों को लैपटॉप, स्कूटी भी बांटी जा रही हैं।

सहायक पशुचिकित्सा अधिकारी पद के लिए

चयनित छात्र परेशान, डायरेक्टर को सौंपा ज्ञापन

नियुक्ति सूची जारी न होने से भविष्य अधर में

भोपाल। मध्य प्रदेश के पशुपालन एवं डेयरी विभाग में साल 2024 में आयोजित सहायक पशुचिकित्सा क्षेत्र अधिकारी (AVFO) के पद पर चयनित डिप्लोमाधारी छात्र पिछले दो महीने से परेशान हैं। उन्हें अभी तक पात्र व अपात्र छात्रों की सूची और नियुक्ति संबंधी कोई सूचना नहीं मिली है। जिससे उनका भविष्य अधर में लटका है। प्रदेश भर के 100 से अधिक चयनित छात्रों ने गुरुवार को कामधेनु भवन के सामने एकत्र होकर अपना विरोध जताया है। साथ ही पशुपालन एवं डेयरी विभाग के संचालक को ज्ञापन देकर जल्द से जल्द नियुक्ति देने की मांग की है।

आर्थिक रूप से हो रहे परेशान

छात्रों ने अपने पत्र में कहा है कि वे सभी डिप्लोमाधारी अश्रऋ पद के लिए चयनित हुए थे। उनके दस्तावेजों का सत्यापन भी एक महीने पहले हो चुका है। इसके बावजूद, विभाग द्वारा कोई सूचना नहीं दिए जाने से वे मानसिक और आर्थिक रूप से परेशान हो रहे हैं।

नियुक्ति का कर रहे इंतजार

छात्रों ने बताया कि सभी चयनित डिप्लोमाधारी छात्र ने पशुपालन एवं डेयरी विभाग के संचालक से निवेदन किया है कि जल्द से जल्द डिप्लोमाधारियों की पात्र व अपात्र सूची जारी की जाए। साथ ही, नियुक्ति प्रदान की जाए। यह स्थिति उन छात्रों के लिए चिंता का विषय बन गई है। एक साल से अधिक समय पहले चयन प्रक्रिया पूरी की है और अब नियुक्ति का इंतजार कर रहे हैं।

शहरी विकास के ब्लूप्रिंट और भविष्य की योजनाओं पर केंद्रित होगा कॉन्क्लेव

शहरी विकास के नए युग की ओर बढ़ते कदम

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 11 जुलाई को इंदौर स्थित ब्रिलियंट कन्वेंशन सेंटर में आयोजित ह्लमध्यप्रदेश ग्रोथ कॉन्क्लेव 2025 झ सिटीज ऑफ टुमॉरोह्व का शुभारंभ करेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव कॉन्क्लेव में होटल, पर्यटन, रियल एस्टेट और इंफ्रास्ट्रक्चर क्षेत्रों के प्रमुख निवेशकों से संवाद करेंगे। यह आयोजन प्रदेश में शहरी विकास के ब्लूप्रिंट और भविष्य की योजनाओं पर केंद्रित रहेगा। इस उच्च स्तरीय आयोजन में देश के 1500 से अधिक निवेशकों, उद्योगपतियों, कॉर्पोरेट प्रतिनिधियों की सहभागिता होगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव दोपहर 1:30 बजे कॉन्क्लेव स्थल पर पहुँचकर एक्जीबिशन का अवलोकन करेंगे, उसके बाद विशिष्ट अतिथियों के साथ बैठक करेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव दोपहर 3 बजे दीप प्रज्ज्वलन के साथ कॉन्क्लेव का शुभारंभ करेंगे। कॉन्क्लेव में नगरीय विकास एवं आवास मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय और नगरीय प्रशासन विभाग के वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित रहेंगे। आयोजन में क्रेडाई, नगर निगम, आईडीए, स्मार्ट सिटी, हाउसिंग बोर्ड, मैट्रो, हुडको, एलआईसी सहित कई संस्थाओं की प्रदर्शनी भी लगाई जाएगी।

तकनीकी सत्रों का आयोजन

कॉन्क्लेव में चार तकनीकी-सत्र आयोजित होंगे, जिनमें ह्लशहरी उत्कृष्टता के लिए आधिनिक तकनीक, विकास के केंद्र के रूप में शहर, भविष्य के लिए सतत हरित शहरीकरण और भविष्य के शहरों की यातायात व्यववस्थाह्व जैसे विषयों पर विशेषज्ञ सहभागिता करेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव कॉन्क्लेव में टढ लॉकर, एळ अर्बन ट्रांसफॉर्मेशन समिट 2025 ब्रोशर का विमोचन, एमओयू साइनिंग और ह्लसौगातह्व का उद्घाटन एवं अनावरण करेंगे। वह निवेशकों को प्रशस्ति-पत्र भी भेंट करेंगे। इसके साथ ही मध्यप्रदेश के शहरीकरण में निवेश अवसरों पर आधारित लघु फिल्मों का प्रदर्शन भी किया जायेगा।

शहरीकरण में निवेश के अवसर

प्रदेश में मेट्रो, ई-बस, मल्टीमॉडल हब, अफोर्डेबल हाउसिंग, वॉटरफ्रंट डेवेलपमेंट, सीवेज नेटवर्क, ई-गवर्नेंस, स्वच्छ ऊर्जा, इलेक्ट्रिक वाहन, स्मार्ट रोड्स जैसे क्षेत्रों में निवेश की असीम संभावनाएँ हैं। प्रदेश में अफोर्डेबल हाउसिंग में 8 लाख 32 हजार से अधिक किफायती आवास तैयार किये जा चुके हैं और 10 लाख से अधिक नए आवासों पर कार्य चल रहा है, जिनमें लगभग ?50,000 करोड़ का निवेश संभावित है। रियल इस्टेट की योजनाओं के क्रियान्वयन के लिये प्रदेश में गुणवत्तापूर्ण मानव संसाधन उपलब्ध हैं। पाईपलाइन वॉटर सप्लाई कवरेज की सुविधा और शतप्रतिशत शहरी क्षेत्र सीवरेज सिस्टम उपलब्ध है। नगरीय क्षेत्रों में स्थानीय निकायों में 23 सेवाएं ऑनलाइन डिजिटल प्लेटफार्म पर उपलब्ध कराई गई हैं। नगरीय निकायों में सेन्ट्रलाइज पोर्टल के माध्यम से मंजूरी दी जा रही है। प्रदेश के शहरी क्षेत्रों में बुनियादी सुविधाओं से जुड़ी 17 हजार 230 योजनाएं क्रियान्वित की जा रही है। शहरी क्षेत्रों में स्वच्छ पर्यावरण के लिये 2 हजार 800 करोड़ और वॉटर फ्रंट से संबंधित डेव्हलपमेंट में 2 हजार करोड़ रुपए की परियोजनाओं पर कार्य किया जा रहा है। प्रदेश में शहरी क्षेत्रों में सुगम परिवहन व्यवस्था के विस्तार के लिये 21 हजार करोड़ रुपए की परियोजनाएं संचालित हैं। वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने और पेट्रोलियम ईंधन के कार्बन फुट-फ्रंट रोकने के लिए इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा दिया जा रहा है। प्रदेश के बड़े शहरों में 552 इलेक्ट्रिक बसों का संचालन शुरू किया जा रहा है। प्रदेश में इलेक्ट्रिक वाहनों को प्रोत्साहित करने के लिए इलेक्ट्रिक व्हीकल पॉलिसी-2025 लागू की गई है। इंदौर में आयोजित यह ग्रोथ कॉन्क्लेव न केवल प्रदेश की शहरी योजनाओं को रफ्तार देगा, बल्कि निवेशकों को एक मजबूत और विश्वसनीय मंच भी प्रदान करेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव की नेतृत्व में प्रदेश शहरी परिवर्तन की ओर तेजी से अग्रसर है।

मुख्य सचिव की अध्यक्षता में 194 वीं राज्य स्तरीय बैंकर्स कमेटी की हुई बैठक

भोपाल। मुख्य सचिव अनुराग जैन की अध्यक्षता में मंत्रालय में 194 वीं राज्य स्तरीय बैंकर्स कमेटी की बैठक हुई। बैठक में 192 एवं 193 वीं बैठक का पालन प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया। बैठक में वित्तीय वर्ष 2024-25 के बैंक बिजनिस, क्रेडिट प्लान, प्रदेश में नवीन बैंक शाखाओं की अद्यतन स्थिति, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, प्रधानमंत्री जन-धन योजना, अटल पेंशन योजना, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, पीएम स्वनिधि, पीएम विश्वकर्मा स्कीम, के अलावा कृषि, उद्यानिकी, पशुपालन, मत्स्य पालन एवं अन्य विषयों पर चर्चा की गयी। मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन ने पीएम स्वनिधि योजना के 19196 प्रकरणों के लंबित रहने पर नाराजगी व्यक्त की एवं संबंधित बैंक प्रबंधकों को नोटिस देने के निर्देश दिये। साथ ही सभी लंबित प्रकरणों का निराकरण 15 दिन में करने के लिए निर्देशित किया। स्वामित्व योजना का लाभ हितग्राहियों को देने के निर्देश दिये गये। मुख्य सचिव ने विभिन्न योजनाओं में इंश्योरेंस क्लेम की जानकारी देने वित्तीय जागरूकता अभियान चलाने के लिए वित्त विभाग को निर्देशित किया। बैठक में अपर मुख्य सचिव वन श्री अशोक वर्णवाल, अपर मुख्य सचिव उच्च शिक्षा, संसदीय कार्य, श्री अनुपम राजन, प्रमुख सचिव, औद्योगिक नीति एवं निवेश श्री राघवेंद्र कुमार सिंह, प्रमुख सचिव राजस्व श्री विवेक कुमार पोरवाल एवं बैंकों के मुख्य महाप्रबंधक, प्रबंधक एवं निदेशक उपस्थित थे।

निःशुल्क साइकिल प्राप्त होने पर विद्यार्थियों ने दिया मुख्यमंत्री डॉ. यादव को धन्यवाद

"साइकिल से मिलेगी रफ्तार - स्कूल समय पर पहुंचने में होगी आसानी"

भोपाल। शासन की निःशुल्क साइकिल वितरण योजना के अंतर्गत कमला नेहरू सांदीपनि कन्या विद्यालय, भोपाल में आयोजित निःशुल्क साइकिल वितरण कार्यक्रम में जब विद्यार्थियों को साइकिलें प्राप्त हुई, तो उनके चेहरे खुशी से खिल उठे।

निःशुल्क साइकिल प्राप्त होने पर वे अत्यंत प्रसन्न हैं और इसके लिए म.प्र. शासन और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को हृदय से धन्यवाद ज्ञापित कर रहे हैं। शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, टीलाखेड़ी की कक्षा 9वीं की छात्रा कुमारी रिया भारती ने मुख्यमंत्री के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहा, ह्लअब हमें स्कूल समय पर पहुंचने में आसानी होगी। धन्यवाद मुख्यमंत्री जी।ह्व इसी विद्यालय की कुमारी पूजा खन्ना ने कहा कि "पैदल विद्यालय पहुंचने में अधिक समय लगता था,

अब में 10 मिनिट में विद्यालय पहुंच जाऊंगी। मैं अपने मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद देती हूँ।" कुमारी सिमरन गौर ने भी निःशुल्क साइकिल प्रदाय योजना के प्रति प्रसन्नता व्यक्त करते हुए मुख्यमंत्री डॉ.

मोहन यादव का आभार माना। कुमारी सिमरन ने कहा कि "निःशुल्क साइकिल प्राप्त होने से जीवन में रफ्तार प्राप्त हुई हैं। अब हम आत्मविश्वास के साथ विद्यालय जाएंगे। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इस अवसर पर कहा कि ह्लप्रदेश सरकार का संकल्प है कि कोई भी विद्यार्थी केवल साधन के अभाव में शिक्षा से वंचित न रहे।

निःशुल्क साइकिल वितरण योजना से विद्यार्थी आत्मनिर्भर बनेंगे, समय की बचत होगी तथा उनकी उपस्थिति में भी सुधार आएगा।ह्व उन्होंने छात्र-छात्राओं को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं देते हुए उन्हें परिश्रम और लगन के साथ अध्ययन करने की प्रेरणा दी। प्रदेश सरकार द्वारा संचालित निःशुल्क वितरण योजना न केवल विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करती है, बल्कि शिक्षा के क्षेत्र में समावेशी विकास का मार्ग भी प्रशस्त करती है। छात्राओं ने कहा कि वे मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा चलाई जा रही इस लोकहितकारी एवं दूरदर्शी पहल के लिए उनका हृदय से धन्यवाद करते हैं।

बाढ़ से दो बच्चे व एक युवक की मौत

कलेक्टर ने किया बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का निरीक्षण

दैनिक रेवांचल टाइम्स नरसिंहपुर। बुधवार को कलेक्टर श्रीमती शीतला पटले ने बुधवार को जिले में हुई अतिवर्षा से बाढ़ प्रभावित क्षेत्र बेलखेड़ी में शेढ़ नदी का पुल, कठौतिया में तसला नाला और झांसीघाट का निरीक्षण किया। उन्होंने नागरिकों से अपील की कि पुल के ऊपर से पानी बहने की स्थिति में या पुल क्षतिग्रस्त होने पर नदी-नाले पार न करें। कलेक्टर श्रीमती पटले ने कठौतिया में तसला नदी का पुल क्षतिग्रस्त होने पर वाहनों की आवाजाही पर रोक लगाने के निर्देश दिये, जिससे किसी भी प्रकार की दुर्घटना न हो। उन्होंने इस अवसर पर मैदानी अमले को नियमित रूप से बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों एवं नदी- नालों पर निगरानी रखने के निर्देश दिये।

पुलिस तथा मैदानी अमला रहे तैनात

पुल-पुलियो के ऊपर से पानी जाने या क्षतिग्रस्त होने पर बैरीकेटिंग लगाने को कहा, जिससे कोई भी नागरिक पुल-पुलियो को पार न कर सकें। उन्होंने बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में नागरिकों की सुरक्षा हेतु पुलिस तथा मैदानी अमले को तैनात रहने को कहा। कलेक्टर श्रीमती पटले ने निर्देश दिये कि जिले में हो रही अतिवर्षा व नदी-नालों में बाढ़ की स्थिति होने पर तत्काल सूचना दें, जिससे जन-माल की सुरक्षा बनी रहे। उन्होंने मैदानी अमले को अतिवर्षा व बाढ़ की स्थिति पर लगातार निगरानी रखने को कहा। किसी भी प्रकार की घटना होने पर इसकी सूचना तत्काल देने के निर्देश दिये। निरीक्षण के दौरान जिला एवं जनपद स्तरीय अधिकारी मौजूद थे।

तीन बच्चे डूबे दो के शव बरामद

बारिश के चलते स्थानीय सींगरी नदी में बाढ़ आने से तीन बच्चे डूब गए। जिनमे से दो के शव बरामद हो चुके है वही तीसरे की तलाश जारी है। मिली जानकारी के अनुसार थाना क्षेत्र स्टेशनगंज के विपतपुरा निवासी तीन बच्चों के नदी में डूब गए। दो बालकों के शव बरामद कर लिए गए हैं। एक बालक की तलाश में एनडीआरएफ की टीम लगी हुई है। बताया जा रहा है कि तीनों बालक मंगलवार शाम को सींगरी नदी के पास रेलवे पुल के निकट डेम देखने गए थे। वापस नहीं आने पर परिजनों ने उनकी तलाश शुरू की गई। पुलिस ने बताया कि तीनों बच्चे शाम साढ़े पांच बजे घर से निकले थे। रात 9 बजे तक घर न लौटने पर परिजनों ने पुलिस को सूचना दी गई। स्टेशन गंज और कोतवाली थाने के 25 पुलिसकर्मियों ने रात 9:15 से ढाई बजे तक नदी में सर्च ऑपरेशन चलाया तलाश के दौरान सुबह 7.30 पर 11 वर्षीय अक्षत मेहरा का शव सींगरी नदी के निचले हिस्से में जलभराव वाली जगह से मिला। करीब 1.30 पर 12 वर्षीय वासू अग्रवाल का शव भी मिल गया। 11 वर्षीय कृष्णा प्रजापति अभी भी लापता हैं।

बड़े पुल के पास मिला युवक का शव

सींगरी नदी मे बाढ़ होने के कारण नगर के दो वार्डों को जोड़ने वाले सींगरी पुल के उपर पानी होने के युवक नदी

पार करते समय बह गया था जिसका शव बड़े पुल के पास बुधवार की सुबह मिला। मिली जानकारी के अनुसार किसानी वार्ड निवासी जाकिर खान नदी पार करते समय बह गया था घटना की जानकारी मिलते ही एसडीआएफ की टीम द्वारा खोजने जुट गई थी। ज्ञात हो कि उक्त पुल नगर के सुभाष वार्ड और पाठक वार्ड को जोड़ता है। उक्त पुल से आवागमन भी काफी रहता है। पुल नीचा होने के कारण बाढ़ जल्दी आ जाती है। पुलिस ने शव बरामद कर शव का परीक्षण कराकर परिजनों को सौंप दिया।

ग्राम पंचायतों में उप निर्वाचन के लिए अधिसूचना जारी

दैनिक रेवांचल टाइम्स नरसिंहपुर। मप्र राज्य निर्वाचन आयोग भोपाल द्वारा पंचायतों के उप निर्वाचन वर्ष 2025 के पदों के चुनाव कराये जाने के लिए एक जुलाई को अधिसूचना जारी की गई हैं। जिले की 5 ग्राम पंचायतों में उप निर्वाचन के लिए अधिसूचना जारी की गई है। जिन पंचायतों में उप चुनाव होने हैं, उन स्थानों पर आदर्श आचार संहिता प्रभावशील हो गई है। आचार संहिता प्रभावशील हो जाने के कारण पंचायतों के उप निर्वाचन वर्ष 2025 के निर्वाचन निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण कराये जाने के उद्देश्य से जिला दंडाधिकारी श्रीमती शीतला पटले ने एक जुलाई से निर्वाचन परिणाम 29 जुलाई तक तत्काल प्रभाव से शस्त्र लाइसेंस निलंबित करने के आदेश जारी किए हैं। उक्त आदेश शस्त्र अधिनियम 1959 के प्रावधानों के तहत जारी किया है। जारी आदेश के मुताबिक सभी शस्त्र लाइसेंस धारी उनके लाइसेंस में दर्ज सभी शस्त्र तीन दिवस के भीतर अनिवार्य रूप से संबंधित थाने में जमा कर पावती प्राप्त करेंगे। साथ ही जिन ग्राम पंचायत जनपद पंचायत के सीमा क्षेत्रों में चुनाव संपन्न होने हैं, वहां किसी भी प्रकार के अस्त्र-शस्त्र प्रवेश धारण करना वर्जित होगा। आदेश का उल्लंघन पाये जाने पर संबंधित शस्त्र लायसेंसधारियों के विरूद्ध सख्त वैधानिक कार्यवाही की जावेगी। यह आदेश बैंक सुरक्षा गार्ड शासन से स्वीकृत गार्ड सुरक्षा बलों, पुलिस सुरक्षा बलों व अर्धसैनिक बलों पर लागू नहीं होगा। उल्लेखनीय है कि जिले की जनपद पंचायत गोटेगांव की ग्राम पंचायत पिपरिया मुशरान, जनपद पंचायत बाबई चीचली की ग्राम पंचायत गांगई व आड़ेगांव खुर्द और जनपद पंचायत चांवरपाठा की ग्राम पंचायत ढिलवार व इमलिया. में उप चुनाव निर्वाचन वर्ष 2025 के निर्वाचन निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण कराये जाने के उद्देश्य से यह आदेश जारी किया है।

जनजातीय आदिवासी न्याय महाअभियान 15 से

दैनिक रेवांचल टाइम्स नरसिंहपुर। जनजातीय कार्य मंत्रालय भारत सरकार एवं राज्य शासन के जनजातीय कार्य विभाग मंत्रालय के निदेर्शानुसार जिले में धरती आबा जनजातीय उत्कृष्ट अभियान- डीएजीयूए और प्रधानमंत्री जनजातीय आदिवासी न्याय महाअभियान- पीएम जनमन जागरूकता और लाभ संतृप्ति शिविर का आयोजन किया जायेगा। यह शिविर 15 जुलाई 2025 तक लगाये जायेंगे। सीईओ जिला पंचायत दलीप कुमार ने संबंधित अधिकारी- कर्मचारी को निर्देशित किया है कि वे अनुसूचित जनजाति के हितग्राहियों को निर्धारित शिविर स्थलों में उपस्थित कराकर शासन की विभिन्न योजनाओं से लाभांवित किया जाना सुनिश्चित करेंगे। उक्त अधिकारी- कर्मचारी संबंधित शिविर स्थलों में उपस्थित रहकर शासकीय विभिन्न योजनाओं से हितग्राहियों को लाभांवित करते हुए सेक्टर अधिकारी, नोडल अधिकारी व सहायक नोडल अधिकारियों को कार्य की प्रगति से अवगत करायेंगे।

अभाविप के स्थापना दिवस पर पूर्व कार्यकताओं ने किया पौधारोपण

दैनिक रेवांचल टाइम्स नरसिंहपुर। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के पूर्व कार्यकताओं द्वारा अभाविप के स्थापना दिवस पर जयप्रकाश वार्ड स्थित पार्क में पौधारोपण किया कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वार्ड पार्षद अनिल दुबे ने कहा कि पौधारोपण का हमारे जीवन में अधिक महत्व है ,ये पर्यावरण संरक्षण के साथ साथ वातावरण को शुद्ध रखता है। पूर्व कार्यकर्ता नीरज लुनावत ने कहा कि कि परिषद हमेशा छात्र हित, समाज हित और राष्ट्र हित के लिए कार्य करता है और इसी संकल्प के साथ वर्ष 1949 में परिषद की स्थापना की गई थी उन्होंने आगे कहा कि अभाविप स्वामी विवेकानंद जी के बताए हुए रास्ते पर चलते हुए छात्र हित के कार्यों में कार्य कर रही है। पूर्व कार्यकर्ता मुकेश सिंघई ने परिषद के समय किए गए कार्यों को साझा किया एवं उन्होंने आगे कहा कि समय-समय पर आंदोलन कर छात्रों की मांगों के लिए संघर्ष हुआ है। परिषद राष्ट्र के पुनर्निर्माण के क्षेत्र में अभाविप छात्रों के बीच काम कर रहा है। पूर्व कार्यकर्ता रजत चैहान ने कहा कि अभाविप कोई साधारण संगठन नहीं, अपितु एक राष्ट्र चेतना का आंदोलन है। यह एक विचार है, जो हमें सिखाता है कि विद्यार्थी होना केवल किताबों

तक सीमित रहने का नाम नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण का संकल्प है। इस अवसर पर पूर्व कार्यकताओं में मुख्य रूप से प्रदीप जैन, अंकेश अग्रवाल, सौरभ जैन, प्रखर दुबे, वैभव नेमा, बोनी गुप्ता, अर्जुन लांबा, हर्ष जैन, ऋषि सिंह की उपस्थिति रही।

जिले में रेत खनन पर पूर्णतः प्रतिबंधित

दैनिक रेवांचल टाइम्स नरसिंहपुर। राज्य स्तरीय पर्यावरण निर्धारण प्राधिकरण (सिया) द्वारा जारी आदेश के परिपालन में कलेक्टर द्वारा जारी आदेश के तहत जिले में स्थानीय मौसम संबंधी बदलाव को देखते हुए इस मानसून सत्र 30 जून की मध्यरात्रि से एक अक्टूबर 2025 तक जिले की नदियों से रेत खनन पर रोक लगाई गई है। इस अवधि में जिले की समस्त नदियों स्वीकृत खदानों से खनिज रेत का उत्खनन करना पूर्णत प्रतिबंधित किया गया है। यह जानकारी प्रभारी अधिकारी खनिज नरसिंहपुर ने दी है।

तहसीलदार श्री शर्मा की तहसीलदार पद पर पदस्थापना

दैनिक रेवांचल टाइम्स नरसिंहपुर। कलेक्टर श्रीमती शीतला पटले ने तहसीलदार गौरीशंकर शर्मा को अस्थायी तौर पर आगामी आदेश तक तहसीलदार करेली के पद पर नियुक्त करने के आदेश जारी किये हैं। उल्लेखनीय है कि राज्य शासन के राजस्व विभाग के निदेर्शानुसार तहसीलदार गौरीशंकर शर्मा का स्थानांतरण जिला अनूपपुर से जिला नरसिंहपुर किया गया है। शासन के आदेश के परिपालन में तहसीलदार श्री शर्मा द्वारा 7 जुलाई को पूर्वान्ह में अपनी उपस्थिति जिला कार्यालय में दिये जाने के फलस्वरूप उक्त आदेश जारी किया है।

पीड़ित ने एसपी से की शिकायत, नाबालिग के अपहरण का आरोप

दैनिक रेवांचल टाइम्स नरसिंहपुर। गत दिवस थाना क्षेत्र करेली निवासी पीड़ित पिता द्वारा पुलिस अधीक्षक के नाम लिखित शिकायत देकर कार्रवाई की मांग की गई। शिकायत मे बताया गया कि ढिगसरा निवासी लक्ष्मण रजक पर अपनी बेटी के अपहरण का आरोप लगाया है। पीड़ित ने बताया कि 3 जुलाई की शाम 6: 30 बजे आरोपी उनके घर से भगा ले गया। इस संबंध में करेली थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई गई है। थाना करेली पुलिस ने प्रकरण क्रमांक 599 / 2025 के तहत भारतीय न्याय संहिता की धारा 137(2) में मामला दर्ज किया है। पीड़ित पिता का आरोप है कि स्पष्ट जानकारी देने के बावजूद पुलिस आरोपी के खिलाफ कोई ठोस कार्रवाई नहीं कर रही है। आरोपी की गिरफ्तारी न होने से मेरी बेटी की सुरक्षा खतरे में है।

नारी कल्याण संगठन द्वारा किया गया वृक्षारोपण

दैनिक रेवांचल टाइम्स नरसिंहपुर। गत दिवस नारी कल्याण संगठन ने प्रकृति की प्रति अपनी जिम्मेदारी अनुभव करते हुए वृक्षारोपण कर पर्यावरण किया गया। महिलाओं ने नन्हे बच्चों के किड्जी कमल स्कूल में विभिन्न प्रकार के फलदार, औषधीय एवं फूलों वाले पौधे लगाए ताकि हमारे नौनिहाल प्रदूषण रहित वातावरण में पलें- बढ़ें। इस कार्यक्रम में संगठन की सचिव श्रीमती ज्योति चैहान, उप सचिव श्रीमती साधना जैसवाल, कोषाध्यक्ष श्रीमती मनीषा ताम्रकार, किड़जी की संचालिका श्रीमती स्वाति जैसवाल, श्रीमती शालिनी दुबे, श्रीमती सुनंदा भट्ट, श्रीमती अरुणा दुबे, श्रीमती शोभा नागपुरे, श्रीमती गीता ताम्रकार एवं श्रीमती सुमन शर्मा उपस्थित रहीं ।

भारत ने तोड़ा वेस्टइंडीज का वर्ल्ड रिकॉर्ड इंटरनेशनल क्रिकेट में किया अनोखा करिश्मा

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत और इंग्लैंड के बीच पांच टेस्ट सीरीज अभी 1-1 से बराबरी पर खड़ी हुई है। इंग्लैंड ने पहला मुकाबला 5 विकेट से जीता था। इसके बाद टीम इंडिया ने दूसरा मैच 336 रनों से जीतकर धमाकेदार वापसी की थी। अब लॉर्ड्स के ऐतिहासिक मैदान पर दोनों टीमों के बीच तीसरा मुकाबला खेला जा रहा है। इस मैच में इंग्लैंड के कप्तान बेन स्टोक्स ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया है। टॉस हारने के साथ भारत ने एक खास रिकॉर्ड बना दिया है।

भारतीय क्रिकेट टीम ने हारा लगातार 13वां टॉस- भारतीय क्रिकेट टीम ने इंटरनेशनल क्रिकेट में लगातार 13 मैचों में टॉस हारा है। भारत ने ये टॉस 31 जनवरी 2025 से लेकर 10 जुलाई 2025 के बीच हुए मैचों में हारे हैं। इसी के साथ भारत ने वेस्टइंडीज का वर्ल्ड रिकॉर्ड तोड़ दिया है। इससे पहले

इंटरनेशनल क्रिकेट में लगातार सबसे ज्यादा टॉस हारने का रिकॉर्ड वेस्टइंडीज के नाम था। विंडीज ने 2 फरवरी 1999 से 21 अप्रैल 1999 के बीच लगातार 12 मैचों में टॉस हारे थे।

इंग्लैंड दौरे पर भारत हार चुका तीन टॉस- भारत ने जो लगातार 13 मैचों में टॉस हारे हैं। इनमें रोहित शर्मा की कप्तानी में 8 बार, शुभमन गिल की कप्तानी में तीन बार और सूर्यकुमार यादव की कप्तानी में दो बार टॉस हारे हैं। इंग्लैंड दौरे पर भारत अपना तीसरा टेस्ट मुकाबला खेल रहा है और तीनों में ही भारत को गिल की कप्तानी में टॉस हारने पड़े हैं।

प्रसिद्ध कृष्णा हुए प्लेइंग इलेवन से बाहर - अब तीसरे टेस्ट मैच के लिए भारतीय कप्तान शुभमन गिल ने प्लेइंग इलेवन में एक बदलाव किया है। उन्होंने प्रसिद्ध कृष्णा को प्लेइंग इलेवन से बाहर का रास्ता दिखाया है। वहीं जसप्रीत बुमराह की एंट्री हुई है। कृष्णा इंग्लैंड के खिलाफ शुरूआती दोनों टेस्ट मैचों में अच्छा नहीं कर पाए थे और बुरी तरह से फ्लॉप साबित हुए थे। अब इस टेस्ट में बुमराह के आने से भारतीय तेज गेंदबाजी आक्रामण को बल मिलेगा। उनका साथ देने के लिए टीम में आकाश दीप और मोहम्मद सिराज को मौका मिला है।

यूपी में बदल गए घर-मकान और दुकान बनाने के नियम, जानें क्या-क्या हुआ बदलाव

नई दिल्ली, एजेंसी। उत्तर प्रदेश में रहने वाले करोड़ों लोगों की एक बहुत बड़ी टेंशन खत्म हो चुकी है। यूपी की योगी आदित्यनाथ सरकार ने शहरों में रहने वाले लोगों को बड़ी राहत देते हुए आवासीय प्लॉट पर मकान के साथ-साथ दुकान या कार्यालय बनाने की मंजूरी दे दी है। यानी यूपी में लोग अब अपने आवासीय प्लॉट का व्यवसायिक इस्तेमाल भी कर सकेंगे। इतना ही नहीं, योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट की एक अहम मीटिंग में 100 वर्ग मीटर तक के आवासीय और 30 वर्ग मीटर तक के व्यवसायिक प्लॉट पर निर्माण कराने के लिए नक्शा पास कराने की अनिवार्यता को भी खत्म कर दिया है।

बिना नक्शा पास कराए होंगे निर्माण

यूपी में लोग अब 100 वर्ग मीटर तक के आवासीय और 30 वर्ग मीटर तक के व्यवसायिक प्लॉट पर बिना नक्शा पास कराए निर्माण करा सकते हैं। हालांकि, उन्हें विकास प्राधिकरण में रजिस्ट्रेशन कराना होगा। यूपी सरकार के इस फैसले से लोगों को नक्शा पास कराने की लंबी प्रक्रिया से तो छुटकारा मिलेगा ही, साथ ही इस काम में होने वाली वसूली से भी राहत मिलेगी। यूपी में ये सभी बदलावह्यउत्तर प्रदेश विकास प्राधिकरण भवन निर्माण एवं विकास उपविधियां और आदर्श जोनिंग रेगुलेशन्स-2025 के तहत किए गए हैं। दरअसल, सरकार ने पुराने नियमों को बदलकर अब नए नियम बना दिए हैं। नए नियमों के तहत, घनी आबादी वाले शहरों में 24 मीटर और कम आबादी वाले शहरों में 18 मीटर चौड़ी सड़क पर स्थित आवासीय प्लॉट पर मकान के साथ दुकान और कार्यालय भी बना सकते हैं।

कार्यालय जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास जिला नरसिंहपुर म.प्र.

कक्ष क्रमांक 77 नरसिंह भवन कलेक्ट्रेट जिला नरसिंहपुर
ई-मेल-wcdnar@nic.in

आधार आपरेटर चयन हेतु आवेदन आमंत्रण विज्ञप्ति

संचालनालय महिला एवं बाल विकास म.प्र. भोपाल का के पत्र क्रमांक ई-फाइल /WCD/1/0044/2025-CPSA-DWCD/ आधार/ 1645 भोपाल दिनांक 20.5.2025 एवं पत्र क्रमांक 1688 दि. 26.5.2025 के निदेर्शानुसार महिला एवं बाल विकास विभाग जिला नरसिंहपुर अंतर्गत संचालित 06 बाल विकास परियोजनाओं क्रमशः नरसिंहपुर, गोटेगांव, करेली, चॉवरपाठा, चीचली एवं सांईखेडा की 12 आधार मशीनों (प्रत्येक परियोजना हेतु 02 मशीनों के मान से) के संचालन हेतु आधार परीक्षा पास आपरेटर्स का अस्थाई रूप से चयन किये जाने हेतु पूर्व में प्रचलित प्रकिया को निरस्त करते हुए इस विज्ञप्ति प्रकाशन दिनांक से दिनांक 18.7.2025 शाम 4 बजे तक कार्यालय जिला कार्यक्रम अधिकारी मबावि. नरसिंहपुर में पुनः नवीन आवेदन आमंत्रित किये जाते हैं। आवेदन हेतु निर्धारित प्रारूप एवं आवश्यक शर्तें व अधिक जानकारी हेतु कार्यालय जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास में कार्यालयीन समय में प्राप्त किये जा सकते हैं।

जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला
एवं बाल विकास जिला- नरसिंहपुर

ट्रैफिक रूल पर भारी, वीआईपी गाड़ी!

नियम क्या सिर्फ आम जनता के लिए हैं?

100% ब्लैक फिल्म, अवैध हूटर और सायरन, बिना नंबर प्लेट

जबलपुर में रसूखदारों की मनमानी पर यातायात विभाग मौन, आम आदमी पर हो रही ताबड़तोड़ कार्रवाई

दैनिक रेवांचल टाइम्स, जबलपुर। अतुल कुमार जबलपुर शहर की सड़कों पर दोहरे कानून खुलकर सामने आ रहे हैं। एक ओर आम नागरिकों को छोटी-छोटी गलतियों पर ट्रैफिक चालान थमा दिया जाता है, वहीं दूसरी ओर प्रभावशाली लोगों की गाड़ियाँनियमों को सरेआम कुचलती नजर आती हैं - बिना किसी रोकटोक या कार्रवाई के।

गाड़ियों में खुलेआम नियमों का मखौल

100 % ब्लैक फिल्म - खुलेआम चुनौती

सुप्रीम कोर्ट और परिवहन मंत्रालय की सख्त मनाही के बावजूद, जबलपुर की सडकों पर कई वीआईपी गाडि?ों में काली फिल्म अब भी लगी है। नियम यह कहता है कि गाड़ियों में पारदर्शी शीशे अनिवार्य हैं, लेकिन ये गाड़ियाँ शायद कानून से ऊपर हैं।

अवैध हूटर और सायरन - आम जनता की शांति भंग

इन गाड़ियों में लगे सायरन और हूटर न सिर्फ डर पैदा करते हैं, बल्कि आम वाहन चालकों के लिए खतरा भी बनते हैं। कोई पूछने वाला नहीं कि किस नियम के तहत ये गाड़ियाँ खुद को "एम्बुलेंस" या "पुलिस" जैसा व्यवहार देती हैं।

बिना नंबर प्लेट - कानून से बच निकलने का आसान रास्ता

अनेक वीआईपी गाड़ियाँ या तो नंबर प्लेट से रहित हैं, या फिर कीपैड वाले डिजिटल नंबर लगाए गए हैं जो आसानी

से मिटाए जा सकते हैं। ये न केवल अपराध छिपाने का साधन हैं, बल्कि प्रशासन की लापरवाही की मिसाल भी।

विभागीय पक्षपात - एकतरफा कार्रवाई

आम आदमीः हेलमेट न होने पर ?1000 चालान, नंबर प्लेट थोड़ा घिसी तो गाड़ी सीज, नो-पार्किंग में खड़ी स्कूटी पर तुरंत कार्रवाई। वीआईपी ग्रुपः हूटर बजाते हुए रेड लाइट तोड़ते हैं, सीना तान कर गलत साइड से चलाते हैं, नियम तोड़ना जैसे अधिकार बन चुका है।

जनता में आक्रोश - सोशल मीडिया पर सवालों की बौछार

- "क्या ये ट्रैफिक नियम सिर्फ स्कूटी चलाने वालों के लिए बनाए गए हैं?"
- "ब्लैक फिल्म वाले एसयूवी वालों को कौन सी इम्युनिटी मिली है?"

"क्या कोई कार्रवाई सिर्फ गरीब पर ही होती है?"

किस वीआईपी गाड़ी के नाम से सबसे ज्यादा नियम उल्लंघन दर्ज, फिर भी कार्रवाई नहीं, किन थाना क्षेत्रों में नियमों की सबसे ज्यादा अनदेखी हो रही है, किस ट्रैफिक चौकी को मिल रहे हैं मूक दर्शक जैसे निर्देश। अब जबलपुर ट्रैफिक पुलिस को जवाब देना होगा : क्या सड़क पर कानून का राज होगा या वीआईपी दबदबे का?

गौर नदी में बहकर आई लाश को रेस्क्यू कर निकाला

दैनिक रेवांचल टाइम्स, जबलपुर। कोतवाली थानांर्तगत बल्देवबाग यूनियन बैंक के सामने बने नाले में पड़ी एक युवक की लाश को पुलिस ने बरामद कर पंचनामा कार्रवाई की और पोस्टमार्टम के लिए मेडिकल कालेज अस्पताल भिजवाया। मृतक कौन है व कहां का रहने वाला है इसकी अब तक पतासाजी नहीं हो पाई है। कोतवाली पुलिस ने बताया कि सुबह लगभग 8:30 बजे क्षेत्रीय नागरिकों द्वारा पुलिस को यह सूचना दी गई कि बल्देवबाग स्थित नाले में एक युवक मृत अवस्था में पड़ा हुआ है। सूचना पर पहुंची पुलिस ने लाश को नाले से निकलवाया,पानी में पड़े होने के कारण लाश का लगभग 60 प्रतिशत हिस्सा सड़ चुका था। पुलिस को अनुमान है कि मृतक शराब के नशे में रहा होगा जो कि नाले में गिरने के दौरान मृत अवस्था प्राप्त हो गया। फिलहाल पुलिस ने मर्ग कायम कर लाश को पोस्टमार्टम के लिए मेडिकल कालेज अस्पताल भिजवा दिया है। रिपोर्ट आने के पश्चात ही मौत होने

के असल कारण का पता लग पायेगा। गौर पुलिस चौकी क्षेत्र के कोसमघाट में आज सुबह एक युवक की लाश नदी में उतराती मिली। सूचना पर गौर चौकी प्रभारी टेक चंद शर्मा बल के साथ मौके पर पहुंचे। स्थानीय गोताखोर की मदद से लाश को पानी से बाहर निकाला गया है। प्राथमिक जांच में पुलिस ने पाया है कि लाश बरेला हिनौतिया भूही निवासी लक्ष्मण परस्ते की है। पुलिस ने मृतक के परिवार से संपर्क करते हुए लाश को पोस्टमार्टम के लिए भेज मामले की विस्तृत जांच पड़ताल शुरू कर दी है।

जबलपुर देह व्यापार कांड में मुख्य सरगना फरार

एसपी ने आरोपी पर किया 5 हजार का इनाम घोषित, पीड़िता ने लगाए पुलिस पर बचाने के आरोप

दैनिक रेवांचल टाइम्स, जबलपुर। जबलपुर के गढ़ा क्षेत्र में करीब एक माह पहले सामने आए देह व्यापार के मुख्य आरोपी शीतल दुबे उर्फ मथुरा प्रसाद को पुलिस अब तक नहीं पकड़ पाई है। एसपी संपत उपाध्याय ने बुधवार को आरोपी की गिरफ्तारी के लिए 5 हजार रुपए का इनाम घोषित किया है। वहीं पीड़िता ने आरोप लगाया है कि आरोपी को पुलिस जानबूझकर बचा रही है। इस मामले में भाजपा के मंडल अध्यक्ष अतुल चौरसिया को गिरफ्तार किया जा चुका है। उन्हें पार्टी ने निष्कासित भी कर दिया है। गढ़ा क्षेत्र में देह व्यापार चलने की शिकायत असम की एक महिला ने की थी। इसके बाद पुलिस ने कार्यवाही करते हुए अतुल चौरसिया को गिरफ्तार किया था, जबकि मुख्य आरोपी फरार हो गया था। अब महिला ने आरोप लगाए हैं कि डिंडोरी के गल्ला गोदाम क्षेत्र निवासी मुख्य आरोपी को पुलिस बचा रही है। बता दें कि 1 जून को गढ़ा पुलिस ने होटल अतिथि में छापा मारकर देह व्यापार के अड्डे का खुलासा किया था।

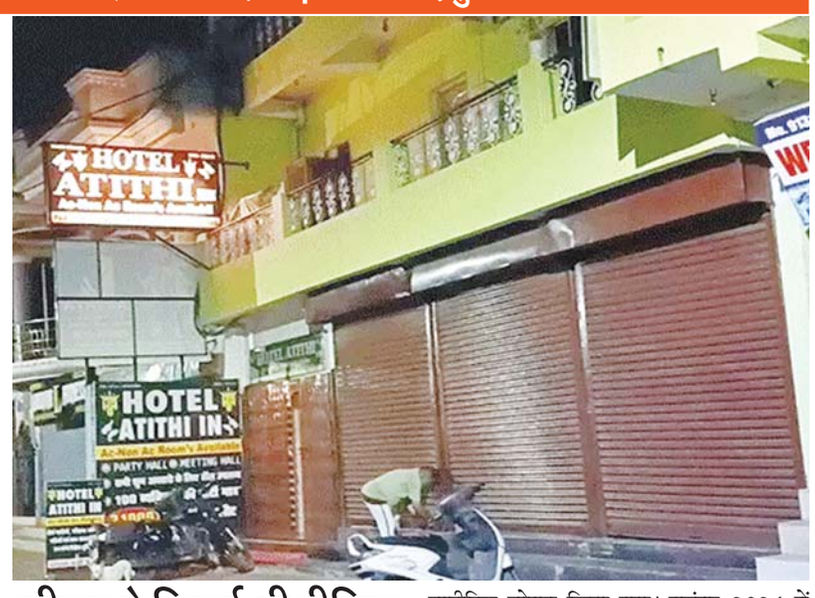

शीतल ने दिलाई थी पीड़िता को होटल में नौकरी

पीड़िता ने बताया था कि वह वर्ष 2023 में जबलपुर आई थी और एक पार्लर में काम करने के दौरान उसकी पहचान शीतल दुबे से हुई थी। बाद में शीतल ने उसकी मुलाकात अतुल चौरसिया से कराई और होटल में नौकरी दिलवाई।

पुरुषों के साथ जबरिया भेजा जाता था

महिला ने आरोप लगाया कि होटल में उसे अन्य युवतियों के साथ रखा जाता था और पुरुषों को उनके साथ जबरन भेजा जाता था। इनकार करने पर उसे धमकाया गया और बंधक बनाकर शारीरिक शोषण किया गया। नवंबर 2024 में अतुल चौरसिया ने पीड़िता के साथ दुष्कर्म भी किया था। पुलिस ने छापे के दौरान अतुल चौरसिया को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया, लेकिन शीतल दुबे अब तक फरार है। पीड़िता का कहना है कि पुलिस की धीमी कार्रवाई से उसे न्याय मिलने में विलंब हो रहा है।

हर ग्राहक से 2 से 5 हजार रुपए तक वसूलते थे

पीड़िता ने बताया कि होटल में आने वाले पुरुषों को सीधे उसके कमरे में भेजा जाता था। हर ग्राहक से 2 से 5 हजार रुपए लिए जाते थे, लेकिन उसे उसमें से बहुत कम पैसा दिया जाता। जब भी वह पैसे मांगती, तो बहला-फुसलाकर चुप करा दिया जाता। कई बार पैसे मांगने पर उसे धमकाया भी गया।

संबल योजना के लाभार्थियों की ट्यूशन और एग्जाम फीस सरकार भरेगी मध्य प्रदेश हाई कोर्ट का आदेश

दैनिक रेवांचल टाइम्स, जबलपुर। मध्य प्रदेश हाई कोर्ट ने एक महत्वपूर्ण मामले में कहा कि संबल योजना के लाभार्थी विद्यार्थियों की ट्यूशन फीस व परीक्षा फीस सरकार ही भरेगी। हाई कोर्ट ने रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय को निर्देश दिए कि याचिकाकर्ता छात्रों से शुल्क वसूल किए बिना ही उनका परीक्षा फार्म स्वीकार कर उन्हें परीक्षा में शामिल करें। न्यायमूर्ति अतुल श्रीधरन व न्यायमूर्ति दीपक खोत की युगलपीठ ने राज्य सरकार को निर्देश दिए हैं कि 30 दिन के भीतर संबल योजना के तहत लाभार्थी छात्रों की फीस विश्वविद्यालय को भुगतान करें। जबलपुर निवासी मनीष बघेल और यामिनी सिंह की ओर से अधिवक्ता विशाल बघेल व रोहित रघुवंशी ने पक्ष रखा। उन्होंने बताया कि याचिकाकर्ता जबलपुर विवि में एलएलएम पाठ्यक्रम के छात्र हैं। याचिकाकताओं को मुख्यमंत्री जनकल्याण (संबल) योजना के तहत प्रवेश मिला था। इस योजना के तहत प्रवेश लेने वाले छात्रों को ट्यूशन एवं परीक्षा शुल्क से छूट प्राप्त होती है। रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय द्वारा उन्हें परीक्षा फॉर्म भरने की अनुमति नहीं दी जा रही, क्योंकि उन्होंने ट्यूशन एवं परीक्षा शुल्क जमा नहीं किया है।

सावन के जाम से हर साल लड़खड़ाती है ट्रैफिक व्यवस्था

दैनिक रेवांचल टाइम्स, जबलपुर। शहर में हर साल सावन के महीने में दोपहर 12 बजे से रात 9 बजे तक राहगीरों का सड़कों पर चलना दूभर हो जाता है। चूंकि कल से सावन लग रहा है, इस कारण पुराने अनुभवों को देखते हुए लोग घबरा रहे हैं। पुलिस व्वस्था चूंकि त्यौहारों में काम नहीं आती, इस कारण व्यापारी भी परेशान है। चूंकि फ्लाईओवर चालू नहीं हुआ है, इस कारण यातायात का दबाव बाजारों कह और है। चौराहों के साथ प्रमुख मार्गों में यातायात का दबाव आज गुरु पूर्णिमा से ही बढ़ गया। मुख्य बाजार में बिना रोकटोक निकलने वाले दोपिहया-तिपहिया वाहनों से व्यवस्था यूं भी लगातार बिगड़ रही है। संकरी गलियों में दुकानों के आगे खड़े रहने वाले वाहनों से समस्या और भी बढ़ गई है। ट्रैफिक पुलिस द्वारा सख्ती ना बरतने के कारण दिन में कई बार बाजार में जाम की स्थिति बन रही है। सवान माह में शहर के मुख्य बाजार बड़ा फुहारा, सदर बाजार, मिलौनीगंज, सुपर मार्केट, रांझी,अधारताल, ग्वारीघाट रोड, चुंकीनाका, गढा बजरिया, दीनदयाल, मेडिकल रोड सहित कई इलाकों में यातायात व्यवस्था चरमराई हुई है। मंगलवार को आंशिक रूप से कुछ बाजार बंद होने के बावजूद बाजार क्षेत्र जाम से जूझता रहा है। शहर की आबादी और वाहन संख्या के हिसाब से ट्रैफिक पुलिस की कमी भी बढ़ रहे यातायात दबाव का प्रमुख कारण है। स्टाफ की कमी के चलते संपूर्ण ट्रेफिक व्यवस्था को सुचारू करना मुश्किल हो रहा है। प्रमुख बाजार से लगी छोटी गलियों में वाहनों की भीड़ के कारण राहगीरों का बाजार में पैदल चलना मुश्किल हो रहा है।

दुकानों के आगे खड़े रहते हैं वाहन

बाजार में यातायात व्यवस्था बिगाड़ने में दुकानदार भी काफी आगे हैं। दुकानों के आगे उनके और कर्मचारियों के दोपहिया वाहन खड़े रहते हैं, जिससे मार्ग और संकरा हो जाता है। मिलौनीगंज से लेकर बड़ा फुहारा होते हुए मालवीय चौक, तीनपत्ती चौराहा तक स्थित लगभग हर दुकान के आगे कई दोपिहया वाहन खड़ा रहता है।

अवैध पार्किंग बन रही समस्या

बाजार क्षेत्र में नगर निगम द्वारा पार्किंग स्थल करीब-करीब तय कर दिए गए हैं, इसके बावजूद वाहन चालक मनमर्जी के मुताबिक ही कहीं भी वाहनों को पार्क कर देते हैं। जिसके चलते अक्सर जाम की स्थिति बन जाती है। जंयती कॉम्पलेक्स, गलगला, लार्डगंज, शिवाजी मैदान, गोरखपुर बाजार सहित कई हिस्सों में अवैध पार्किंग स्थल बने हुए हैं।

यातायात नियमों का पालन नहीं करते चालक

शहरी परिक्षेत्र में वाहन चलाने वाले अधिकतर लोग ट्रेफिक नियमों का पालन नहीं करते हैं। खासकर युवा नियमों की परवाह नहीं करते जिसके कारण जाम सहित दुर्घटना की संभावनाएं बनी रहती है। बड़े चौराहों सहित प्रमुख मार्गों में वाहन चालक नियमों का पालन करें तो जाम से कुछ हद तक निजात मिल सकेगा।

जहां आतंक मचा रखा था,वहां हाथ जोड़कर मांगी माफी

दैनिक रेवांचल टाइम्स, जबलपुर। जबलपुर के शोभापुर में रहने वाले कुख्यात बदमाश को रांझी पुलिस ने उस दौरान गिरफ्तार किया, जब वह क्षेत्र में आंतक के दम पर अवैध वसूली कर रहा था। पुलिस प्रवीण रजक को पकड़ने के बाद उस स्थान पर ले गई, जहां पर वह अपनी गुंडागर्दी के दम पर लोगों के साथ मारपीट कर अवैध वसूली किया करता था। 6 जुलाई को बदमाश प्रवीण रजक ने अपने एक साथी के साथ शोभापुर में रहने वाले निशांत सिंह के आफिस में जाकर जबरन पैसों की मांग की, और जब उन्होंने रुपए देने से इन्कार किया तो वहां पर बड़े-बड़े पत्थर पटक कर तोड़फोड़ मचा दी। बदमाश का एक साथी देबू अन्ना अभी फरार है, जिसकी तालाश में पुलिस जुटी हुई है। मारपीट, अवैध वसूली, शराबखोरी सहित कई संगीन अपराधों में लिप्त 25 वर्षीय प्रवीण रजक ने शोभापुर न्यू शोभापुर में आंतक मचाकर रखा था। राह चलते लोगों के साथ मारपीट, पैसे छीन लेना, चाकू की नोक पर अवैध वसूली करना यह उसका काम हो गया था। स्थानीय लोग जब कभी इसके खिलाफ थाने में शिकायत दर्ज करवाते तो यह शोभापुर से फरार हो जाता। बदमाश के खिलाफ दो दर्जन से अधिक आपराधिक मामले दर्ज हैं। 6 जुलाई को आरोपी अपने साथी देबू अन्ना के साथ शोभापुर में रहने वाले निशांत सिंह के घर पहुंचा, जहां उसने रुपए की डिमांड की, जिस पर निशांत ने मना कर दिया।

ओम होम हैल्थ केयर सर्विस
हमारे पास अशक्त बुजुर्ग मरीजों की देखभाल हेतु नर्स,वार्ड वॉय,आया बाई,फिजियोथैरेपी और दवाईयॉ घर पर उपलब्ध कराए जाते हैं।
प्रो.जितेन्द्र पटैल CERVIC - 24X7 Hourse
मो. 9340721556,9753518166
पता-केनरा बैंक महाराष्ट्र हॉई स्कूल गोल बाजार जबलपुर(म.प्र.)

Manufacturer of t-shirts & lowers Mo. 9174614421, 9406763810
CHANDRAKALA TEXTILES
सभी प्रकार की टी-शर्ट ऑर्डर पर बनाई और प्रिंट की जाती हैं और स्पोर्ट्स सबलिमेसन जर्सी बनाई जाती हैं।
Address : shop no 151, jabalpur fashion design cluster market Lema garden Gohalpur jabalpur 482001

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, मुकेश कुमार श्रीवास द्वारा माँ रेवा पब्लिकेशन एन्ड प्रिंटर्स लष्मीपुर मुस्कान प्लाजा के पीछे विवेकानंद वार्ड एम आर 4 रोड़ जबलपुर म.प्र. 482001 से मुद्रित तथा लष्मीपुर मुस्कान प्लाजा के पीछे एम आर 4 रोड 21 स्वामी विवेकानंद वार्ड जबलपुर म.प्र. 482001 से प्रकाशित । संपादकः अतुल कुमार बंदेवार RNI. Reg. No MPHIN39695 (समस्त विवादों का न्यायालयीन क्षेत्र जबलपुर) Email:- revanchaljabalpur@gmail.com मोब. 7509202320, 9406771592